mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-167 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रुपये

सतना
19 जून 2025 गुरुवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

महिलाओं के खिलाफ... @ पेज 7

राहुल गांधी के 55वें बर्थडे पर युवाओं को रोजगार का तोहफा

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और रायबरेली सांसद राहुल गांधी 19 जून को अपना 55वां जन्मदिन मनाएंगे। इस मौके पर भारतीय युवा कांग्रेस तालकटोरा स्टेडियम में एक विशाल रोजगार मेले का आयोजन करेगी। युवा कांग्रेस के अध्यक्ष उदय भानू छिब ने बताया कि इस मेले का आयोजन कर युवा कांग्रेस, युवाओं को सिर्फ रोजगार नहीं, बल्कि उम्मीद, सम्मान और एक बेहतर भविष्य देने का प्रयास कर रही है। इस रोजगार मेले में देश भर से कुल 161 कंपनियां हिस्सा लेंगी। ये कंपनियां वॉक-इन इंटरव्यू के जरिए इंटरव्यू में सफल हुए उम्मीदवारों को ऑन स्पॉट ऑफर लेटर उन्हें देंगी। इस रोजगार मेले के लिए रजिस्ट्रेशन पूरी तरह से फ्री रखा गया है और अब तक 11,000 से अधिक उम्मीदवार अपना पंजीकरण करवा चुके हैं। इस आयोजन में देश की कई जानी-मानी कंपनियां भी शामिल होंगी। बता दें कि राहुल गांधी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं। राहुल गांधी का जन्म 19 जून 1970 को नई दिल्ली में हुआ था। वह भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के बेटे और भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाती हैं। राहुल गांधी ने अपनी शिक्षा भारत और विदेश दोनों जगह प्राप्त की है। उन्होंने फ्लोरिडा के रोलिन्स कॉलेज से ग्रेजुएशन की पढ़ाई की और कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के ट्रिनिटी कॉलेज से एम. फिल. की डिग्री हासिल की है। अपनी पढ़ाई के बाद उन्होंने कुछ समय लंदन में एक कंसल्टिंग फर्म, मॉनिटर ग्रुप के साथ काम किया और बाद में भारत आकर मुंबई में एक प्रौद्योगिकी आउटसोर्सिंग कंपनी, बैकॉप्स सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना में मदद की।

राहुल गांधी का सियासी करियर: राहुल गांधी ने 2004 में अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत की, जब उन्होंने अपने पिता की पारंपरिक सीट उत्तर प्रदेश की अमेठी लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा और जीते। इसके बाद वह 2009 और 2014 में भी अमेठी से सांसद चुने गए। 2007 में उन्हें कांग्रेस महासचिव नियुक्त किया गया। 2013 में वह कांग्रेस के उपाध्यक्ष बने। 2017 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष का पद संभाला, लेकिन 2019 के लोकसभा चुनाव में पार्टी की हार के बाद उन्होंने पद छोड़ दिया। 2019 के लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी अमेठी सीट से स्मृति ईरानी से हार गए, लेकिन उन्होंने केरल के वायनाड से भी चुनाव लड़ा था और वहां से जीत हासिल की थी। इसके बाद 2024 के लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी ने उत्तर प्रदेश की रायबरेली सीट और केरल की वायनाड सीट दोनों से जीत हासिल की। उन्होंने रायबरेली सीट को बरकरार रखने का फैसला किया।

संक्षिप्त समाचार

क्या ईरान पर हमला करेगा अमेरिका?

वाशिंगटन (एजेंसी)। ईरान और इजरायल के बीच जारी संघर्ष में अब अमेरिका की भी एंट्री हो गई है और अमेरिका खुलेआम ईरान को धमका रहा है। इस बीच ईरान पर हमला करने के बारे में पूछे जाने पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा बयान सामने आया है। ट्रंप ने कहा, ÷क्या आप वाकई सोचते हैं कि मैं इसका जवाब दूंगा? मैं ऐसा कर सकता हूं, मैं ऐसा नहीं भी कर सकता, कोई नहीं जानता कि मैं क्या करने जा रहा हूं। मैं आपको बता सकता हूं कि ईरान को बहुत सारी परेशानियां हैं और वे बातचीत करना चाहते हैं। उन्होंने 2 सप्ताह पहले मुझसे बातचीत क्यों नहीं की?÷ ईरान की तरफ से एक्स हैंडल पर पोस्ट किया गया, %किसी भी ईरानी अधिकारी ने कभी व्हाइट हाउस के दरवाज़े पर गिड़गिड़ाने की मांग नहीं की है। उनके झूठ से ज़्यादा

घृणित बात सिर्फ़ ईरान के सर्वोच्च नेता को ÷हटा देने÷ की उनकी कायरतापूर्ण धमकी है। ईरान दबाव में बातचीत नहीं करता, दबाव में शांति स्वीकार नहीं करेगा, और निश्चित रूप से प्रासंगिकता से चिपके हुए युद्ध-प्रेमी के साथ नहीं। ईरान किसी भी खतरे का जवाब जवाबी धमकी से देगा, और किसी भी कार्रवाई का जवाबी उपायों से देगा। इजरायल-ईरान संघर्ष के बीच ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सीधी धमकी दी है। ट्रंप ने कहा, ÷हमें पता है कि ईरान का सुप्रीम लीडर कहां छुपा है। अमेरिका को खामेनेई की सटीक लोकेशन पता है। इसलिए ईरान को बिना शर्त सरेंडर करना चाहिए।÷ हालांकि ट्रंप की इस धमकी के बाद खामेनेई ने बुधवार को राष्ट्र को दिए संबोधन के दौरान सरेंडर करने से साफ इंकार कर दिया।

क्रोएशिया में संस्कृत मंत्रोच्चार के साथ हुआ पीएम मोदी का स्वागत

क्रोएशिया (एजेंसी)। भारत के प्रधानमंत्री नेंद्र मोदी तीन देशों की यात्रा के आखिरी चरण में बुधवार को

क्रोएशिया पहुंचे हैं। यहां जगरेब में पीएम मोदी का संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ भव्य स्वागत किया गया है। क्रोएशियाई नागरिकों के एक समूह ने संस्कृत मंत्रोच्चार के साथ पीएम मोदी का स्वागत किया है। भारतीय समुदाय के लोगों ने भी वंदे मातरम और भारत माता की जय के नारों के साथ पीएम मोदी का स्वागत किया। पीएम मोदी और क्रोएशिया के प्रधानमंत्री आंद्रेज प्लेंकोविक ने प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता की है। भारत और क्रोएशिया ने द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने के लिए कई अहम मुद्दों पर चर्चा की है। क्रोएशिया के जगरेब में पीएम मोदी के स्वागत में दोनों देशों के बीच मजबूत सांस्कृतिक संबंधों का प्रदर्शन हुआ है। पीएम मोदी ने इस पल का वीडियो भी सोशल मीडिया पर शेयर किया है। वीडियो में दिख रहा है कि सफेद कपड़े पहने क्रोएशियाई नागरिकों का एक समूह पीएम मोदी के स्वागत में कई संस्कृत मंत्रों का मंत्रोच्चार कर रहा है। पीएम मोदी ने इस वीडियो को शेयर करते हुए लिखा- ÷संस्कृति के बंधन मजबूत और जीवंत हैं! यह देखकर खुशी हुई कि क्रोएशिया में भारतीय संस्कृति को इतना सम्मान मिलता है।÷ आपको बता दें कि पीएम मोदी क्रोएशिया की यात्रा करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। क्रोएशिया में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि लोकतंत्र, कानून का शासन, बहुलवाद और समानता, वे साझा मूल्य हैं जो हमें जोड़ते हैं। पीएम मोदी ने बताया है कि भारत और क्रोएशिया ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को तीन गुना गति देने का निर्णय लिया है।

मंदसौर में 50 रुपये के लिए 6 लोग ढाबा संचालक को अपहरण कर राजस्थान ले गए, जमकर की पिटाई

मंदसौर (निप्र)। मध्य प्रदेश के मंदसौर में एक अजीबो गरीब मामला सामने आया है। यहां मात्र पचास रुपये के लिए छह लोगों ने एक युवक को मारा पीटा और अपहरण करके राजस्थान ले गए। घटना के पांचवे दिन पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। जबकि दो अन्य फरार हैं। मामला मंदसौर के भानपुरा थाना क्षेत्र का है। यहां बाबूल्दा निवासी बबलू मीणा भानपुरा रोड पर ढाबा संचालित करता है और 13 जून को इसी ढाबे पर बबलू का मात्र 50 रूपये की लेनदेन की बात को लेकर कुछ लोगों से विवाद हो गया। वे सभी आरोपी मिलकर बबलू के साथ मारपीट किये और अपहरण कर राजस्थान ले गए। बबलू के पिता ने मामले की जानकारी पुलिस को दी। इसके बाद मामला दर्ज कर पुलिस आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए जुट गई। वारदात के पांचवे दिन पुलिस राजस्थान के भवानीमंडी के पास एक खेत में बने कमरे से बबलू को सकुशल बरामद कर लिया। इसके साथ अपहरण करने वाले चार आरोपियों को गिरफ्तार भी कर लिया। दो आरोपी अभी पुलिस की गिरफ्त से फरार हैं। पुलिस उन्हें भी गिरफ्तार करने की कोशिश में जुटी है।

पायलट ने ATC को दी तकनीकी खराबी की जानकारी

भुवनेश्वर एयरपोर्ट पर टल गया विमान हादसा

इंदौर (एजेंसी)। भुवनेश्वर एयरपोर्ट पर आज एक बड़ा हादसा टल गया। कोलकाता जा रही इंडिगो की फ्लाइट 6श्च 6101 को उड़ान भरने से कुछ ही मिनट पहले रोक दिया गया। जानकारी के अनुसार, विमान के पायलट ने टेक-ऑफ से पहले एयर ट्रैफिक कंट्रोल को किसी तकनीकी खराबी की जानकारी दी। इसके बाद सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए फ्लाइट को रनवे से वापस पार्किंग बे में ले जाया गया। विमान में सवार सभी यात्रियों को सुरक्षित तरीके से उतार लिया गया है। फिलहाल किसी के घायल होने की खबर नहीं है। इंडिगो की ओर से अभी तक इस मामले में कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। फिलहाल टेक्निकल टीम विमान की जांच कर रही है। वहीं कोलकाता जाने वाले यात्रियों को दूसरे फ्लाइट में शिफ्ट कर दिया गया है और वैकल्पिक विमान को रवाना कर दिया गया है।

बता दें कि बुधवार को छत्तीसगढ़ के रायपुर से भी ऐसा ही चौंका देने वाला मामला सामने आया था। दरअसल दिल्ली से रायपुर पहुंची

इंडिगो की फ्लाइट का गेट तकनीकी खराबी के चलते लंबे समय के लिए लॉक हो गया। इस कारण छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल समेत कई अन्य नेता भी विमान के भीतर ही फंस गए। सामने आई जानकारी के मुताबिक, इंडिगो की ये फ्लाइट दिल्ली से रायपुर पहुंची थी। ये फ्लाइट रायपुर में 2.25 बजे लैंड होती है। हालांकि, विमान के लैंड होने के बाद फ्लाइट का दरवाजा ही नहीं खुला। इसके बाद विमान में यात्री करीब 40 मिनट तक फंसे रहे। विमान में सवार यात्रियों के साथ में पूर्व सीएम भूपेश बघेल, विधायक चातुरी नंद और रायपुर महापौर मीनल चौबे भी सवार थे।

भोपाल का 90 डिग्री वाला ब्रिज होगा रिडिजाइन

भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में ऐशबाग स्टेडियम के पास बना एक रेलवे ओवरब्रिज (ऋक्क) आधिकारिक उद्घाटन से पहले ही चर्चा का विषय बन गया था क्योंकि इसमें 90 डिग्री का एक अजीबोगरीब मोड़ है, जिसे लेकर

स्थानीय लोगों ने चिंता जताई थी। इस निर्माण कार्य से जुड़े अधिकारियों की दलील थी कि जमीन की कम उपलब्धता और नजदीक में एक मेट्रो स्टेशन होने के कारण उनके पास कोई और विकल्प मौजूद नहीं था। लेकिन अब रेलवे ने डिजाइन में बदलाव के लिए अतिरिक्त जमीन देने की सहमति दे दी है। लोक निर्माण विभाग (क्कङ्ख्र) सूत्रों ने बताया कि रेलवे की ओर से जमीन उपलब्ध कराने पर ब्रिज की रेलिंग को तोड़कर 90 डिग्री वाले मोड़ को और घुमावदार बनाया जाएगा। इससे पुल की चौड़ाई 3 फीट तक बढ़ जाएगी, जिससे वाहनों को मोड़ने के लिए अतिरिक्त जगह मिलेगी। 18 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित इस रेलवे ओवरब्रिज की लंबाई 648 मीटर और चौड़ाई 8.5 मीटर है। सोशल मीडिया पर यूजर्स और स्थानीय लोगों ने भोपाल के इस रेलवे ओवरब्रिज की तस्वीर शेयर कर इसके डिजाइन पर सवाल खड़े किए थे।

इंडिगो विमान का गेट हुआ लॉक, भूपेश बघेल समेत कई नेता फंसे अंदर

क्यों लॉक हुआ विमान का गेट?

रायपुर (एजेंसी)। अहमदाबाद विमान हादसे के बाद से विभिन्न एयरलाइंस के विमानों में कभी तकनीकी खराबी तो कभी देरी की खबरें सामने आ रही हैं। इस बीच अब छत्तीसगढ़ के रायपुर से चौंका देने वाला मामला सामने आया है। यहां दिल्ली से रायपुर पहुंची इंडिगो की फ्लाइट का गेट तकनीकी खराबी के चलते लंबे समय के लिए लॉक हो गया। इस कारण छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल समेत

कई अन्य नेता भी विमान के भीतर ही फंस गए। सामने आई जानकारी के मुताबिक, इंडिगो की ये फ्लाइट दिल्ली से रायपुर पहुंची थी। ये फ्लाइट रायपुर में 2.25 बजे लैंड होती है। हालांकि, विमान के लैंड होने के बाद फ्लाइट का दरवाजा ही नहीं खुला। इसके बाद विमान में यात्री करीब 40 मिनट तक फंसे रहे। विमान में सवार यात्रियों के साथ में पूर्व सीएम भूपेश बघेल, विधायक चातुरी नंद और रायपुर महापौर मीनल चौबे भी सवार थे।

अब तक मिली जानकारी के मुताबिक, रायपुर में इंडिगो फ्लाइट का गेट तकनीकी खराबी के कारण लॉक हो गया था। करीब 40 मिनट तक भारी मशक्कत करने के बाद आखिरकार विमान का गेट खुला और इसके बाद सभी यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। अब तक भूपेश बघेल की ओर से इस घटना को लेकर कोई बयान सामने नहीं आया है। इस दौरान विमान में किसी के घायल होने या मेडिकल इमरजेंसी की सूचना नहीं मिली है। एयपोर्ट सूत्रों के मुताबिक, अधिकारियों ने बताया है कि भविष्य में उड़ान सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विमान का गहन निरीक्षण किया जाएगा।इससे पहले मंगलवार को मस्कट से कोच्चि पहुंचे और दिल्ली के लिए रवाना हुए इंडिगो के एक विमान में बम होने की धमकी मिली थी।

बमबारी के बीच आया हार्ट अटैक

इजरायल-ईरान जंग में भारतीय नागरिक की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। इजरायल और ईरान के बीच बीते कई दिनों से भीषण जंग जारी है। आने वाले कुछ दिनों तक इस जंग के रुकने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। इजरायल और ईरान, दोनों को मिला दें तो अब तक सैकड़ों लोगों के मारे जाने की खबर सामने आ चुकी है। इस जंग के बीच अब एक भारतीय नागरिक की भी मौत हो गई है। इजरायल में तेलंगाना के रहने वाले शख्स की बमबारी के दौरान दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई है। आपको बता दें कि इस जंग के बीच बड़ी संख्या में भारतीय नागरिक इजरायल और ईरान में फंसे हुए हैं।

मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव के बीच, सोमवार 15 जून को लगातार बमबारी के कारण इजरायल में काम करने वाले तेलंगाना के जगतियाल जिले के रवींद्र की दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई। रवींद्र इजरायल में विजिट वीजा पर पार्ट-टाइम जॉब कर रहे थे। इस बारे में रवींद्र की पत्नी आर विजयलक्ष्मी ने कहा कि जब जंग शुरू हुई, तो उन्होंने हमें एक दिन फोन किया और बताया कि वे लगातार हो रही बमबारी से डरे

हुए हैं। उन्होंने हमें बताया कि वे अपनी जान गंवा सकते हैं। हमने उन्हें यह दिलासा देने की कोशिश की कि उन्हें कुछ नहीं होगा।

विजयलक्ष्मी ने बताया कि उनके पति को बेचैनी महसूस होती थी और वे अपना ज़्यादातर समय अस्पताल में बिताते थे। वहां, अस्पताल के पास एक बम विस्फोट हुआ और दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई। हमें अस्पताल के अधिकारियों ने उनकी मृत्यु के बारे में सूचित किया। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकार से अपील की कि उनके पति के शव को जल्द उन्हें सौंपने के कदम उठाए जाए।

37 ठिकानों की तलाशी से मचा हड़कंप

दिल्ली में ईडी के ताबड़तोड़ छापे

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (श्वष्ठ) की टीम ने आज 37 ठिकानों पर छापे मारे। ईडी के एक्शन से हड़कंप मच गया। जानकारी के मुताबिक दिल्ली के स्कूलों में कक्षा निर्माण 'घोटाले' की मनी लॉन्ड्रिंग जांच के तहत कई परिसरों पर छापेमारी हुई। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। यह घोटाला कथित तौर पर पूर्ववर्ती आम आदमी पार्टी सरकार के दौरान हुआ था।

प्रवर्तन निदेशालय (श्वष्ठ) ने दिल्ली भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की प्राथमिकी का संज्ञान लेते हुए धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत आपराधिक मामला दर्ज करने के बाद छापेमारी की। सूत्रों ने बताया कि ईडी के अधिकारी ठेकेदारों और निजी संस्थाओं के कम से कम 37 परिसरों की तलाशी ले रहे हैं। यह तुरंत स्पष्ट नहीं हो पाया है कि कुछ नेताओं के परिसरों में भी तलाशी ली जा रही

है या नहीं।

ईडी ने 30 अप्रैल को दर्ज अपनी प्राथमिकी (स्नढ्ढक्र) में आम आदमी पार्टी (ृक्क) के नेता और अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार में मंत्री रहे मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन के खिलाफ मामला दर्ज किया था। प्राथमिकी में आरोप लगाया गया था कि दिल्ली सरकार के स्कूलों में 12,000 से अधिक कक्षाओं या अर्ध-स्थायी संरचनाओं के निर्माण में 2,000 करोड़ रुपये की वित्तीय अनियमितताएं की गईं। दिल्ली का क्लासरूम घोटाला दिल्ली सरकार के सरकारी स्कूलों में क्लासरूम के निर्माण में हुए कथित भ्रष्टाचार से जुड़ा है। यह घोटाला आम आदमी पार्टी की सरकार के दौरान हुआ बताया जा रहा है। आरोपों के मुताबिक 12,748 क्लासरूम के निर्माण में करीब 2000 करोड़ की वित्तीय अनियमितताएं पाई गईं।

हर क्लास के निर्माण की लागत 24.86 लाख रु. बताई गई जबकि आरोप है कि आम तौर पर ऐसे निर्माण की लागत 5 लाख रुपये के आसपास होती है

सरकारी नियमों के उल्लंघन का आरोप, उचित टेंडर प्रक्रिया का पालन किए बिना ही ठेके,क्कसे जुड़े ठेकेदारों को दिए गए।

कई क्लास रूम का निर्माण निर्धारित समय सीमा में नहीं हुआ और निर्माण की गुणवत्ता पर भी सवाल उठाए गए।

दिल्ली के बाटला हाउस में अतिक्रमण के खिलाफ बुलडोजर की तैयारी, प्रशासन अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में बाटला हाउस में आज अतिक्रमण के खिलाफ बुलडोजर चल सकता है। बाटला हाउस के मुरादी रोड पर बुडलोजर चलाने की तैयारी है। दिल्ली विकास प्राधिकरण ने कल रात से ही इन इलाकों में बैरिकेडिंग शुरू कर दी थी। ष्ठ्र ने जिन मकानों और दुकानों पर नोटिस चस्पा किया था, वो अब पूरी तरह से खाली हो रहें हैं। लोग अपने-अपने सामान लेकर दूसरे जगह शिफ्ट हो रहे हैं।

16 जून को अशोक विहार के जेलर वाले बाग में सैकड़ों अवैध झुग्गियों को गिराया गया था।बटला हाउस इलाके के मुरादी रोड में डिमोलिशन को लेकर पुलिस ने बैरिकेडिंग की तैयारी की है। मुरादी रोड पर नोटिस चिपकाया गया था। कोर्ट की तरफ से मिली रोक के बाद उन प्रॉपर्टी को छोड़कर बाकी प्रॉपर्टी को डिमोलिश किया जा सकता है। दिल्ली पुलिस सुरक्षा के मद्देनजर तैयारी कर रही है। ष्ठ्र ने 52 प्रॉपर्टी को लेकर नोटिस जारी किया था जिसमें कई लोग कोर्ट चले गए तो 32 प्रॉपर्टी पर हाई कोर्ट ने अंतरिम रोक लगा दी है। ऐसे में माना जा रहा है कि 20 प्रॉपर्टी के खिलाफ एक्शन देखने को मिल सकता है। मुरादी रोड पर कुल 34 बीघा जमीन है। ष्ठ्र का कहना है कि इनमें से 2.8 बीघा जमीन पर अवैध निर्माण किया गया है। उधर, गोकलपुरी इलाके में लोनी रोड पर झुग्गियों को हटाने का अभियान चल रहा है। पुलिस प्रशासन की निगरानी में झुग्गियों को हटाया गया।

सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिये नकदी रहित उपचार स्कीम

भोपाल , (एजेंसी)। परिवहन सचिव ने सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए नकदी रहित उपचार योजना के क्रियान्वयन के लिए कलेक्टर्स को निर्देश दिये हैं। निर्देश में कहा गया है कि सड़क दुर्घटना पीड़ितों को नकदी रहित उपचार स्कीम के संबंध में उनके अधीनस्थ अधिकारी को यह जिम्मेदारी दी जाये। इसके साथ ही प्रकरणों की नियमित मॉनीटरिंग की जाये। संभाग के सभी कमिश्नर को इस व्यवस्था की नियमित मॉनीटरिंग किये जाने के लिये भी कहा गया है। सड़क सुरक्षा और दुर्घटनाओं को रोकने के लिये सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समय-समय पर निर्देश दिये जा रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट कमेटी ऑन रोड सेफ्टी सम्पूर्ण देश में इसकी नियमित मॉनीटरिंग कर रही है। यह कमेटी विभिन्न राज्यों से रिपोर्ट प्राप्त कर सड़क सुरक्षा संबंधी विभिन्न योजनाओं और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी गाइड-लाइंस की समीक्षा कर सर्वोच्च न्यायालय में प्रतिवेदन प्रस्तुत करती है। प्रदेश स्तर पर मुख्य सचिव द्वारा लगातार बैठक कर इसकी समीक्षा की जा रही है। केन्द्र सरकार ने स्कीम की अधिसूचना 5 मई, 2025 और मार्गदर्शक सिद्धांत अधिसूचना 4 जून, 2025 को जारी की है। इसके लिये यूजर मैनेजमेंट पोर्टल भी तैयार किया गया है। सड़क दुर्घटना प्रकरणों में जहाँ दोषी मोटरयान के पास वैध तृतीय पक्ष बीमा कवरेज था, उसका भुगतान केन्द्र सरकार द्वारा साधारण बीमा कंपनियों के सहयोग से किया जायेगा। जिन प्रकरणों में यह बीमा नहीं है, वहाँ भुगतान स्टेट हेल्थ एजेंसी (एसएचए) अस्पताल के दावे को मंजूरी दिये जाने के 10 दिनों की समयावधि में जिला कलेक्टर्स के अनुमोदन से जिला स्तर पर ही किया जायेगा।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कर्मचारियों के कार्य की प्रशंसा की

भोपाल , (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के खरगोन जिले में 33 केवी लाइन के मेंटीनेस के लिए मंगलवार को नाव की मदद लेना पड़ी। खरगोन जिले में 132 केवी तोरणी अति उच्चदाब ग्रिड से 33 केवी फीडर के माध्यम से अजन गांव, दौड़वा में बिजली वितरण होता है। तोरणी धनगांव 33 केवी फीडर पर इंसुलेटर से कंडक्टर झुलने की अवस्था में आने से बिजली कंपनी कर्मचारियों ने विधिवत परमिट लेकर इसे सुधारने के लिए मंगलवार को योजना बनाई। अंजनगांव वितरण केंद्र प्रभारी इंजीनियर श्री अंकित पटेल की अगुवाई में छः कर्मचारियों ने मेंटीनेस गतिविधियां प्रारंभ की, नावली तालाब के किनारे जहां पोल थे, वहां बारिश का पानी जमा होने पर नाव की मदद से कंडक्टर तार ठीक किए गए, उन्हें पोल पर ठीक से कसा गया एवं 33 केवी लाइन के मेंटीनेस के अन्य जरूरी कार्य किए गए। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने खरगोन जिले के बिजली कर्मचारियों के इस कार्य की प्रशंसा की हैं।

प्रदेश स्तरीय गौ-शाला सम्मेलन 20 जून को

भोपाल। प्रदेश स्तरीय गौ-शाला सम्मेलन का आयोजन 20 जून शुक्रवार को दोपहर 12 बजे से मुख्यमंत्री निवास प्रांगण भोपाल में किया जायेगा। सम्मेलन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तथा पशुपालन एवं डेयरी विकास राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार श्री लखन पटेल शामिल होंगे। सम्मेलन में प्रदेश के समस्त जिलों से शासकीय एवं अशासकीय गौ-शाला संचालकों एवं प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया है। प्रमुख सचिव पशुपालन एवं डेयरी श्री उमाकांत उमराव ने बताया कि सम्मेलन में गौ-शालाओं में गौवंश के व्यवस्थापन के लिए लगभग 50 करोड़ रूपये की राशि अंतरित की जाएगी। आचार्य विद्यासागर जीव दया गौ-सेवा सम्मान योजना के अंतर्गत चयनित गौ-शालाओं एवं संस्थाओं को गौ-सेवा पुरूस्कार प्रदान किए जायेंगे। कार्यक्रम में डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना के हितग्राहियों को हितलाभ वितरण किया जाएगा। सम्मेलन में नवीन गौ-शालाओं को पंजीयन प्रमाण

राज्यपाल मंगुभाई पटेल अभियान के राज्य स्तरीय शिविर में शामिल हुए

भोपाल , (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि केंद्र सरकार द्वारा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर शुरू किया गया जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान जनजातीय सशक्तिकरण और समावेशी विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम हैं। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का उद्देश्य जनजातीय समुदाय के नागरिकों का कल्याण, सशक्तिकरण और विकास करना है। सरकार का यह प्रयास है कि जनजातीय समुदाय के जो नागरिक अभी तक सरकार की सेवाओं, सुविधाओं और योजनाओं से वंचित रह गए हैं, उन्हें लाभान्वित किया जाएं। उनकी देश के विकास में सहभागिता को सशक्त नागरिक के रूप में सुनिश्चित किया जाए। राज्यपाल श्री पटेल धरती आबा अभियान के तहत सीहोर जिले के ग्राम झोलियापुर में आयोजित राज्य स्तरीय शिविर कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि केंद्र सरकार के 18 मंत्रालय समन्वित रूप से अभियान का संचालन कर रहे हैं। सभी जरूरतमंद नागरिकों के लिए पीएम आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना, पीएम उज्ज्वला योजना, एनआरएलएम सहित अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का यह अभियान तभी सार्थक होगा, जब हम सभी मिलकर इस अभियान को सफल बनाने का प्रयास करेंगे। हम सभी का यह दायित्व है कि हम उन सभी जनजातीय समुदाय के नागरिकों को अभियान के तहत लगने वाले शिविरों में जाकर योजनाओं एवं सेवाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित करें और उनकी सहायता करें। उन्होंने कहा कि धरती आबा अभियान के तहत जनजातीय समुदाय के नागरिकों को दिए गए लाभ की मॉनिटरिंग भी की जा रही है और जल्द ही वे इसका अवलोकन करने पुनः सीहोर आएंगे।

राज्यपाल श्री पटेल ने राज्य स्तरीय शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनियों का अवलोकन किया। धरती आबा अभियान के प्रचार-प्रसार के लिए प्रचार रथ को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर विधायक श्री रमाकांत भार्गव ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। प्रारंभ में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने धरती आबा अभियान के तहत जिले में संचालित गतिविधियों एवं क्रियान्वयन के संबंध में जानकारी दी। जिला पंचायत सीईओ डॉ नेहा जैन ने आभार व्यक्त किया।

वैश्विक दक्षता की दिशा में अभिनव पहल

भोपाल , (एजेंसी)। संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क (एसएसआरजीएसपी) में सुभाष इनीशिएटिव के तहत जर्मन भाषा प्रशिक्षण प्रारंभ कर अभिनव पहल की गई है। यह पहल मेटएक्स स्ट्रक्र्स, जर्मनी के सहयोग से प्रारंभ हुई है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को वैश्विक कार्य संस्कृति से परिचित कराना और उन्हें अंतर्राष्ट्रीय रोजगार के अवसरों के लिए सक्षम बनाना है।

मेटएक्स स्ट्रक्र्स के प्रबंध निदेशक श्री ओंकार काकवडे ने जर्मन भाषा की उपयोगिता, औद्योगिक मांग और प्रशिक्षण के संभावित वैश्विक लाभों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि नई संस्कृतियों और अवसरों का द्वार भी है। इस अवसर पर एसएसआरजीएसपी के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री गिरीश शर्मा ने छात्रों से संवाद करते हुए जर्मन भाषा की कुछ मूलभूत अवधारणाएं साझा की। उन्होंने बताया कि एसएसआरजीएसपी का प्रयास केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह युवाओं को वैश्विक नागरिक के रूप में तैयार करने की दिशा में भी समान रूप से प्रतिबद्ध है।

कार्यक्रम में इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नीशियन, मेक्ट्रॉनिक्स टेक्नीशियन, कंक्रीटर, मेटल वर्कर, सड़क निर्माण श्रमिक और राजमिस्त्री जैसे कोर्स से जुड़े विद्यार्थियों ने भाग लिया। भाषा प्रशिक्षण के इस समावेशन ने तकनीकी कौशल के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संवाद और समावेशन की समझ को भी बल दिया है। यह आयोजन एसएसआरजीएसपी की उस व्यापक सोच का उदाहरण है, जो युवाओं को बहुआयामी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। सुभाष इनीशिएटिव के तहत जर्मन भाषा की यह शुरुआत भारत और जर्मनी के कौशल सहयोग की दिशा में एक सार्थक कदम है।

बिजली कंपनी ने करंट से होने वाली दुर्घटनाओं से बचने किया आगाह

भोपाल , (एजेंसी)। मध्यक्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने आम जनता तथा हाथ ठेले पर सामान बेचने वालों को आगाह किया है कि वे अपने हाथ ठेले तथा फुटकर सामान की दुकानें हाईटेंशन लाइनों से दूर लगाएं। कंपनी ने कहा है कि जरा सी असावधानी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है। इसलिए आमजन भी करंट से होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम में सहयोग करें एवं बिजली लाइनों तथा ट्रांसफार्मर से उचित दूरी बना कर ही अपना सामान बेचने के लिए रखें। कईं जग?ह चाय की गुमठियां भी विद्युत लाइनों के समीप तथा ट्रांसफार्मरों से सटाकर चलाई जा रही है, जिनके कारण करंट लगने से कभी भी बड़ी दुर्घटना हो सकती है।कंपनी ने उपभोक्ताओं से अपील में कहा है कि विद्युत लाइनों/ट्रांसफार्मरों एवं उपकरणों के साथ छेड़छाड़ न करें तथा सुरक्षित दूरी बनायें रखें। यदि आँधी तूफान में खंबे/तार टूटे हों तो इसकी सूचना तत्काल शिकायत कॉल सेंटर के टोल फ्री नं. 1912 पर/उपाय ऐप एवं समीप के वितरण केन्द्र कार्यालय में दें। जमीन पर पड़े तारों को छूने या स्पर्श करने की गलती न करें साथ ही पार करने का प्रयास न करें। पान टपरों तथा ऐसी दुकानों जिनमें लोहे की चादर का इस्तेमाल होता है, में वायरिंग को सुरक्षित ढंग से पी.वी.सी. पाईप के द्वारा ही कराई जाए। किसी प्रकार की कटी-फटी लूज वायरिंग से जान-माल का खतरा हो सकता है। बारिश के दौरान विद्युत खम्बे/स्टे के पास पानी भराव वाले स्थान से निकलने की जल्दी न करें। सावधानी अवश्य बरतें क्योंकि बारिश के दौरान करंट लीकेज की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

मध्यक्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने कहा है कि बच्चों और मवेशियों का विशेष ध्यान रखें। अपने मवेशी को बिजली के खम्बे, स्टे वायर इत्यादि से न बांधें। कपड़े सुखाने के लिये जी.आई. तार अथवा रस्सी, सर्विस लाईन के पाईप या बिजली के खम्बों से कभी न बांधें। इसमें करंट आने की संभावना बनी रहती है। घर की दीवार, उपकरण, नल आदि में लीकेज करंट आने पर प्रशिक्षित इलेक्ट्रीशियन से तत्काल ठीक कराएं।

मध्यक्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने कहा है कि घरेलू विद्युत उपकरणों, वायरिंग, स्विच इत्यादि को स्वयं सुधारने के बजाय किसी प्रशिक्षित एवं अनुभवी इलेक्ट्रीशियन की सेवाएं लें। मानव जीवन अमूल्य है। बिजली के स्विच /सॉकिट/बिजली उपकरण बच्चों की पहुंच से दूर रखें।

प्रदेश सरकार समाज के प्रति संवेदनशील -उप मुख्यमंत्री देवड़ा

भोपाल , (एजेंसी)। मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा के निर्देश पर आबकारी विभाग ने अशोका गार्डन स्थित एकतापुरी कॉलोनी के वार्ड 38 में स्थापित की गई शराब की दुकान को हटाए जाने के बाद एकतापुरी कॉलोनी रहवासी संघ ने मंगलवार को उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा का आभार व्यक्त किया। एकता पुरी कॉलोनी रहवासी संघ के रहवासी क्षेत्र की शराब दुकान को हटाने जाने पर उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा का पुष्प-गुच्छ भेंट कर आभार जताया। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि प्रदेश सरकार सामाजिक संवेदनशीलता और जनभावनाओं के प्रति प्रतिबद्ध है। यह निर्णय न केवल बच्चों और युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करेगा बल्कि समाज में नैतिकता, शांति और स्वास्थ्य के उप वातावरण को भी प्रोत्साहित करेगा।

एकतापुरी कॉलोनी रहवासी संघ के अध्यक्ष श्री सीयाराम सिंह ने बताया कि कॉलोनी के रहवासी विगत दिनों से महिलाओं और रहवासियों ने शराब की दुकान हटाने की मांग की थी। इस संबंध में उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा के निर्देश पर आबकारी विभाग ने तुरंत कार्यवाही करते हुए शराब दुकान को अन्य स्थान पर शिफ्ट कर दिया है।

भोपाल एम्स में हिंदी के विस्तार पर जोर

भोपाल , (एजेंसी)। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान भोपाल में राजभाषा हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने और इसके कार्यान्वयन को सशक्त बनाने के उद्देश्य से विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 29वीं तिमाही बैठक 17 जून 2025 को आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता संस्थान के कार्यपालक निदेशक डॉ. अजय सिंह ने की, जिसमें विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्षों और समिति सदस्यों ने भाग लिया। बैठक के दौरान प्रो. अजय सिंह ने संस्थान में हिंदी के प्रयोग की विभागवार समीक्षा की और यह जाना कि दैनिक प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का कितना उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने समिति के सभी सदस्यों से कहा कि वे सभी हिंदी में कार्य करें और अपने विभाग में कर्मचारियों को भी इसके लिए प्रेरित करें। डॉ. सिंह ने कहा, जिस प्रकार एम्स भोपाल हेल्थ सेक्टर में लगातार प्रगति कर रहा है, उसी तरह हमें प्रशासनिक कार्यों में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। बैठक में उपनिदेशक (प्रशासन) कर्नल अजीत कुमार ने कहा कि हिंदी में कार्य करना हमारे लिए सहज और संतोषजनक अनुभव होता है। हमारे कई अधिकारी हिंदी में दक्ष हैं। मैं सभी से अनुरोध करता हूं कि वे अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें।

जो अधिकारी जिमेदारी का निर्वहन नही कर पा रहे उन्हे रिप्लेस करें : ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

भोपाल, (एजेंसी)। बिजली कंपनियों के जिन अधिकारियों द्वारा अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन ठीक ढंग से नहीं किया जा रहा है, उन्हें रिप्लेस करें। ऐसे अधिकारियों के स्थान पर उनके जूनियर सक्षम अधिकारियों को पदस्थ करें। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने यह निर्देश मंगलवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से बिजली ट्रिपिंग और मेंटीनेंस कार्यों की समीक्षा के दौरान दिये। बैठक में एमडी पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने बताया कि बिजली उपभोक्ताओं का फोन नहीं उठाने पर 15 अधिकारियों की वेतन वृद्धि रोकी गयी है। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने अधिकारियों को सख्त लहजे में कहा कि क्षेत्र का सतत भ्रमण करें। उन्होंने कहा

कि टूर प्रोग्राम की जानकारी एडवांस में भेजें। निरीक्षण के दौरान सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों, ट्रिपिंग और मेंटीनेंस की स्थिति प्रमुखता से देखें। जिन शिकायतों का निराकरण 3 से 4 घंटे में हुआ है, उनकी कारण सहित जानकारी दें। इस पर भी विचार करें कि क्या मेंटीनेंस का समय 4 घंटे से कम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बिजली कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार और मारपीट की घटनाओं पर तुरंत संज्ञान लें। मंत्री श्री तोमर ने जिलेवार लंबित शिकायतें एवं उनके निराकरण में लगने वाले समय की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि शिकायतों का निराकरण समय-सीमा में करें। अगर कोई बड़ी घटना नहीं हुई है, तो निराकरण में न्यूनतम समय लगना चाहिये। अगर बड़ी घटना हुई है, तो उसका फोटो, वीडियो और की जा रही कार्यवाही को सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर अपलोड करें। श्री तोमर ने खासतौर से इंदौर की स्थिति की समीक्षा के दौरान कम्पनी के एमडी को स्पष्ट निर्देश दिये कि जरूरत के अनुसार मेन-पॉवर और इक्यूपमेंट्स की कमी दूर करें। साथ ही यह भी देखें कि मेंटीनेंस के बाद भी ट्रिपिंग क्यों हो रही है। रहवासी संघों और जन-प्रतिनिधियों के साथ लगातार सम्पर्क में रहें। उन्होंने कहा कि मानसून तो अभी शुरू हो रहा है।

बिजली उपभोताओं से निरंतर संवाद बनाए रखें : श्री सिंघल

भोपाल , (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने उपभोक्ताओं की सुविधा को देखते हुए फ्यूज ऑफ कॉल (विद्युत अवरोध को दूर करना) समय पर अटेण्ड करने के निर्देश दिए हैं।

प्रबंध संचालक ने कहा है कि कंपनी के समस्त मैदानी अधिकारी अथवा कार्मिक अपने मोबाईल फोन को 24 घंटे चालू रखें। उन्होंने कहा कि बिजली उपभोक्ताओं को किसी तरह की परेशानी न हो, इसलिए बिजली कंपनी के सभी अधिकारी अपना मोबाईल 24 घंटे चालू रखें एवं उपभोक्ताओं के कॉल अटेण्ड करें। साथ ही क्षेत्रीय मुख्य महाप्रबंधक, महाप्रबंधक, संभागीय उपमहाप्रबंधक एवं सभी मैदानी अधिकारी कॉल सेन्टर 1912, व्हाट्सएप चैटबोट तथा स्थानीय वाट्सएप ग्रुप एवं अन्य माध्यम से सप्राप्त होने वाली विद्युत संबंधी शिकायतों का तत्काल समाधान करना सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं। प्रबंध संचालक ने सभी मैदानी अधिकारियों से कहा है कि वे सीआरएम पोर्टल पर सतत् निगरानी रखें और जनप्रतिनिधि तथा उपभोक्ताओं से संवाद बनाये रखें।

कंपनी ने कहा है कि आँधी, बारिश के दौरान एवं अन्य व्यवधान के कारण हुए बिजली फॉल्ट की शिकायतें दर्ज कराने के लिए कंपनी ने उपभोक्ताओं को अनेक विकल्प प्रदान किये हैं। अब उपभोक्ताओं के पास विद्युत व्यवधान संबंधी शिकायतों को दर्ज करने के लिए कॉल सेन्टर के टोल फ्री नंबर 1912, व्हाट्सएप नंबर 0755-2551222, मोबाइल ऐप 'उपाय अथवा कंपनी की वेबसाइट का विकल्प मौजूद है। उपभोक्ता इन विकल्पों में से किसी भी एक विकल्प का उपयोग कर अपनी विद्युत व्यवधान संबंधी शिकायतें दर्ज कर आसानी से निराकरण करा सकते हैं।

कंपनी ने कहा है कि उपभोक्ता शिकायत दर्ज करने के लिए अपने मोबाइल में कंपनी के व्हाटसएप नंबर 07552551222 को सेव कर मैसेज लिखकर भेजें एवं आगामी संदेशों का पालन करें। इसी प्रकार प्ले स्टोर के माध्यम से उपाय ऐप को डाउनलोड कर एवं उसके उपयोग से भी अपनी शिकायत आसानी से दर्ज करा सकते है। कंपनी के पोर्टल पर जाकर एलटी सर्विसेज पर क्लिक करें उसके उपरांत कंपलेंट पर क्लिक करें तथा आगामी निर्देशों का पालन करें अथवा 1912 पर कॉल कर आईवीआरएस के माध्यम से त्वरित शिकायत दर्ज कराने की सुविधा उपलब्ध है।

कंपनी ने कहा है कि बिजली कार्मिक विद्युत आपूर्ति और रखरखाव तथा ऑपरेशन्स को देखते हुए सतर्कता और सजगता से काम करें तथा कोई कार्मिक बिना परमीशन के अवकाश पर न जाए। यदि अवकाश पर जाता है तो उसके स्थान पर वैकल्पिक कार्मिक की तैनाती की व्यवस्था पहले से ही करें। आंधी, तूफान और बारिश के दौरान कॉल सेन्टर में एफओसी (विद्युत अवरोध) से संबंधित उपभोक्ताओं की व्यक्तिगत शिकायतों की संख्या बढ़ जाती है। इसलिए काल सेन्टर के ऑपरेशनल एवं सुपरवाइजरी स्टॉफ को और अधिक सजगता से काम करने के निर्देश दिए गए हैं। मध्यक्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने मैदानी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कहा है कि आपदा के समय संपर्क करने के लिये लाईनमेनों के मोबाईल नंबर आदि की जानकारी अपडेट रखें।

अतुल्य मध्यप्रदेश बना पर्यटकों की पहली पसंद

भोपाल , (एजेंसी)। पर्यटन की दृष्टि से मध्यप्रदेश एक समृद्ध और विविधतापूर्ण राज्य है। इसकी सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक धरोहरें, प्राकृतिक सौंदर्य और वन्यजीव संपदा का आकर्षण अतुल्य मध्यप्रदेश के रूप में पर्यटकों की पहली पसंद बन रहा है। प्रदेश ने वर्ष 2024 में पर्यटन के क्षेत्र में कीर्तिमान रचा है। मध्यप्रदेश में रिकॉर्ड 13 करोड़ 41 लाख पर्यटकों का आगमन हुआ। यह उपलब्धि वर्ष 2023 की तुलना में 19.6 प्रतिशत, 2019 से लगभग 50.6 प्रतिशत और 2020 की तुलना में 526 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाती है। प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि पर्यटन की दृष्टि से मध्यप्रदेश भारत का एक समृद्ध और विविधतापूर्ण राज्य है। प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक संपदा, ऐतिहासिक धरोहरें और वन्यजीव विविधता, पर्यटकों को एक सम्पूर्ण अनुभव प्रदान करती हैं। वर्ष 2024 में 13 करोड़ 41 लाख पर्यटकों का आगमन इस बात का प्रमाण है कि मध्यप्रदेश देश ही नहीं, वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर भी मजबूती से उभर रहा है। यह उपलब्धि शासन की दूरदर्शी नीतियों, आधारभूत ढांचे के विकास और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी का प्रतिफल है। वर्ष 2024 में 1.67 लाख विदेशी पर्यटकों ने भी मध्यप्रदेश की सैर की। खजुराहो में 33 हजार 131, ग्वालियर में 10 हजार 823 और ओरछा में 13 हजार 960 विदेशी पर्यटक पहुंचे। शहरी पर्यटन में भी विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई, जिसमें इंदौर में 9,964 और भोपाल में 1,522 विदेशी पर्यटक शामिल हैं। बांधवगढ़ में 29 हजार 192, कान्हा में 19 हजार 148, पन्ना में 12 हजार 762 और पेंच में 11 हजार 272 विदेशी पर्यटक आए, जो मध्यप्रदेश की वैश्विक अपील को दर्शाता है। धार्मिक पर्यटन = देश की आस्था का नया केंद्र प्रदेश के धार्मिक स्थलों ने वर्ष 2024 में 10.7 करोड़ पर्यटकों को आकर्षित किया।

कई जिलों से आए सदस्यों ने अधिकारियों को बताई समस्या

भोपाल , (एजेंसी)। 1 जुलाई को जीएसटी व्यवस्था के 8 साल पूरे होने वाले हैं। इसे लेकर सेंट्रल जीएसटी कार्यालय भोपाल में कर सलाहकारों और जीएसटी अधिकारियों की सोमवार को बैठक हुई। कर सलाहकारों ने कहा कि अभी भी जीएसटी रजिस्ट्रेशन आवेदन में दिक्कत आती है। भोपाल, सागर, नर्मदापुरम, ग्वालियर व अन्य शहरों के टैक्स लॉ बार सदस्यों ने कहा कि जीएसटी रजिस्ट्रेशन आवेदन की समय सीमा के आखिरी समय में विभाग की तरफ से कुछ जानकारी मांगी जाती है, जिससे दिक्कत होती है। आवेदन की जांच में फिजिकल वेरीफिकेशन के बिना ही निगेटिव रिपोर्ट लगा दी जाती है। इनकम टैक्स, स्टेट जीएसटी की तर्ज पर सलाहकारों ने सेंट्रल जीएसटी में बार रूम की मांग की। सागर-ग्वालियर के सलाहकारों ने अपने जिलों में अपील सुनवाई कैंप की मांग की। बैठक में भोपाल से टैक्स लॉ बार एसो. के अध्यक्ष मृदुल आर्य, सचिव मनोज पारख, चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्था के अध्यक्ष अर्पित राय मौजूद रहे थे। जॉइंट कमिश्नर सेंट्रल जीएसटी योगेश यादव ने बताया कि साल 2023-24 में 2649 फर्मों के रजिस्ट्रेशन की जांच की गई थी जिसमें से 730 बोगस पाए गए थे।

जन सेवा के भाव से कार्य करते हुए लोगों के दुख दूर करने का प्रयास करें-राज्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रदेश की नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने बुधवार को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय धवारी में आयोजित कार्यक्रम में जिले के 6 अस्पतालों को शवों को सुरक्षित रखने के लिए डीप फ्रीजर प्रदान किये। इनमें जिला चिकित्सालय सतना, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कोठी, नागौद, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सिंहपुर, रैगांव तथा स्वास्थ्य केन्द्र शिवराजपुर शामिल हैं। इस मौके पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एलके तिवारी, सिविल सर्जन डॉ. मनोज शुक्ला, डॉ. नलिनी शुक्ला, डॉ. ए द्विवेदी, जीएनएम की प्राचार्य आरती मिश्रा, मण्डल अध्यक्ष ओम सिंह, आकांक्षा सिंह सहित आफिस स्टॉफतथा नर्सिग की छात्रायें उपस्थित रही।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यमंत्री ने कहा कि जिले का स्वास्थ्य अमला जन सेवा के भाव से कार्य करते हुए लोगों के दुख दूर करने का प्रयास करें। उन्होंने बताया कि अभी तक जिले में कुछ संस्थाओं द्वारा ही डीप फ्रीजर उपलब्ध कराये जा रहे थे। लेकिन जरूरत अधिक होने के कारण आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती थी। यह डीप फ्रीजर आमजन और अस्पताल दोनों के उपयोग में आयेगा। अस्पताल प्रबंधन द्वारा इनकी देखरेख और समुचित रूप से संचालन की निगरानी की जायेगी। सबकी सहमति से निर्णय लेकर आर्थिक रूप से सक्षम लोगों के लिए शुल्क का भी निर्धारण किया जा सकता है। जिससे डीप फ्रीजर के मेंटीनेंस और मरम्मत का कार्य कराया जा सकेगा। राज्यमंत्री ने कहा कि अभी तक 30 ग्राम पंचायतों को फायर फाइटर के साथ टैंकर उपलब्ध कराये गये हैं। इन टैंकरों से ग्रामीण क्षेत्रों में जल आपूर्ति के साथ-साथ आगजनी की घटना पर तत्काल काबू पाया जा सकेगा।

खम्हरिया गांव में नए सब स्टेशन का भूमिपूजन

मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड द्वारा एसटीएन योजना के तहत बुधवार को रामपुर बघेलान विधानसभा क्षेत्र के खम्हरिया गांव में 2 करोड़ 35 लाख रूपये की लागत से बनने वाले 33/11 के वी विद्युत सब स्टेशन का भूमिपूजन सांसद गणेश सिंह के मुख्यातिथ्य और विधायक विक्रम सिंह की अध्यक्षता में किया गया। इस मौके पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, अधीक्षण यंत्री पीके मिश्रा सहित बिजली विभाग के अधिकारी तथा ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

राज्यमंत्री ने सुनी आमजनों की समस्यायें

नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने बुधवार को विधानसभा क्षेत्र कार्यालय सतना में आयोजित जनता दरबार में जिले की आम जनता एवं अन्य गणमान्य नागरिक द्वारा प्रस्तुत की गई समस्याओं से रूबरू हुईं। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी द्वारा समस्याओं का निराकरण विभिन्न विभाग से आये अधिकारियों द्वारा कराया गया और जिन समस्याओं का निराकरण शासन स्तर पर किया जाना है। उसके लिये प्रतिवेदन तैयार करने के निर्देश दिये गए।

राज्यमंत्री ने की विकास कार्यों की समीक्षा

प्रदेश की नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने बुधवार को सतना जिले के कोठी नगर परिषद में समस्त पार्षदों के साथ बैठक लेकर विकास कार्यों की समीक्षा की। बैठक में नगर परिषद अध्यक्ष सुखवंती बाई बुनकर, सीएमओ संजय सिंह, इंजीनियर प्रियंवदा सिंह सहित नगर परिषद कोठी के समस्त पार्षदगण मौजूद रहे।

अमर ज्योति नेत्रदान एवं देहदान के लिए लोगों को कर रहा प्रेरित

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। अमर ज्योति नेत्रदान की प्रेरणा से प्रेरित होकर कोठी निवासी श्री नंद किशोर सोनी जी ने 18 जून बुधवार को कार्यालय में पहुंचकर संस्था संयोजक श्री मनोहर डिगवानी जी के हाथों मरणोपरांत देहदान का संकल्प लिया।

सोनी जी देहदान का संकल्प लेते हुए बताया मुझे अमर ज्योति संस्था से प्रेरणा मिली और देहदान करने का मुख्य उद्देश्य बच्चों को मेडिकल कॉलेज में शिक्षा के लिए मानव अंगों की जरूरत होती है और उसकी कमी महसूस होती है इस देह से वह कमी पूरी होगी।

संयोजक श्री डिगवानी ने कहा देह का दान मानवता की सेवा के लिए श्रेष्ठदान है क्योंकि मानव की देह से मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं और आमतौर पर देखा गया कि हजारों में एक या दो ही देहदान होता है।

विनोद गेलानी ने कहा अमर ज्योति नेत्रदान के साथ-साथ देहदान की अलख ज्योति जगाने का बीड़ा उठाया है अमर ज्योति की प्रेरणा से अभी तक 845 नेत्रदान हो चुके हैं एवं 47 लोगों ने मरणोपरांत देहदान का संकल्प लिया है यह 48 वा संकल्प है जबकि 2?? देह मेडिकल कॉलेज को सोपी जा चुकी है।

संकल्प के अवसर पर संस्था के सहसंयोजक मनोज अरोड़ा विनोद गेलानी एवं रूस्ह्य के जिला संयोजक हिंदू जागृति मंच के श्री लव कुश पांडे प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। समिति के मार्गदर्शक योगेश ताम्रकार,संयोजक मनोहर डिगवानी,डॉ.पुष्पराज सिंह,कमल पुरुस्वानी, मनोज अरोरा,मनमोहन माहेश्वरी, विभाष बनर्जी,नरेंद्र चंद्र गुप्ता विनोद गेलानी मनोज वलेजा हरिओम गुप्ता,ललित खुराना श्यामलाल गुप्ता श्याम्,,डॉ. प्रकाश सिंह, संजय वाधवानी,दिलीप सोनी, घनश्याम मंघरानी,अनिल मोटवानी, आशीष मँघनानी,संदीप धूत, विपुल हांडा, प्रदीप अरोरा अनिल शर्मा, नीलाम्बर झा,जेठानंद वाधवानी, होलाराम खिलवानी, दिनेश अग्रवाल,अनिल झुलवानी, बसंत शर्मा,मनीष टेकवानी,रूपेश वलेचा,दीपक गुप्ता,अशोक ताम्रकार,दीपक वाधवानी, निकी मनचंदानी,दीपक चुगवानी, मंजूषा शाह,नीतू अग्रवाल,सुधीर जैन, संदीप चमड़िया सहित सभी सदस्यों ने सोनी जी के प्रति साधुवाद प्रेषित किया है

छात्रावासों में कोचिंग देने के लिए प्रस्ताव आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जनजातीय कार्य विभाग द्वारा संचालित छात्रावासों में विद्यार्थियों को कोचिंग देने के लिए पात्र शिक्षकों के आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए हैं। इस संबंध में जिला संयोजक कमलेश्वर सिंह ने बताया कि अनुसूचित जाति महाविद्यालयीन बालक छात्रावास क्रमांक एक, क्रमांक दो, क्रमांक तीन, बालक छात्रावास विश्वविद्यालय परिसर, कन्या छात्रावास शासकीय कन्या महाविद्यालय तथा कन्या छात्रावास विश्वविद्यालय परिसर में विषय विशेषज्ञ के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। अनुसूचित जाति उत्कृष्ट बालक छात्रावास, उत्कृष्ट कन्या छात्रावास, बालक छात्रावास तथा कन्या छात्रावास रायपुर कर्चुलियान, बालक तथा कन्या छात्रावास सिरमौर, बालक तथा कन्या छात्रावास गंगेव, कन्या छात्रावास जवा में अंगेजी विषय की कोचिंग के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित हैं। मऊगंज जिले में अनुसूचित जाति उत्कृष्ट बालक तथा कन्या छात्रावास मऊगंज, उत्कृष्ट बालक तथा कन्या छात्रावास हनुमना एवं उत्कृष्ट बालक तथा कन्या छात्रावास नईगढ़ी में भी कोचिंग के लिए शिक्षक की आवश्यकता है। इन संस्थानों में कक्षा नवीं, दसवीं के विद्यार्थियों को अंग्रेजी, गणित, विज्ञान एवं कम्प्यूटर की कोचिंग दी जाएगी। साथ ही कक्षा 11वीं और 12वीं के विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, जीव विज्ञान, गणित एवं कम्प्यूटर विषय में कोचिंग दी जाएगी। शासन द्वारा कोचिंग के लिए निर्धारित मापदण्डों के अनुसार नियत मानदेय की सीमा में किसी निजी कोचिंग संस्था से भी कोचिंग कराई जा सकती है। शासकीय शिक्षक अथवा प्राइवेट शिक्षक भी कोचिंग के लिए तैनात किए जा सकते हैं। शिक्षकों का चयन मेरिट के आधार पर किया जाएगा। इसके लिए शिक्षक का संबंधित विषय में 60 प्रतिशत से अधिक अंक होना आवश्यक है। शासकीय विद्यालयों के शिक्षक अपने प्राचार्य के माध्यम से 25 जून तक जिला संयोजक कार्यालय में आवेदन कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना प्राकृतिक आपदा में किसानों को देती है बीमा लाभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। देश में खेती परंपरागत रूप से प्रकृति पर आधारित है। किसान की फसल पर पाले, अधिक वर्षा, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा में हानि का सदैव खतरा रहता है। इससे किसान को सुरक्षा देने के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू की गई है। इस योजना में बीमा कंपनियाँ बीमा की जो राशि तय करती हैं उसमें से किसान को खरीफ फसल के लिए केवल 2 प्रतिशत और रबी फसल के लिए 1.5 प्रतिशत प्रीमियम देना होता है। बागवानी फसलों के लिए प्रीमियम राशि 5 प्रतिशत निर्धारित की गई है। प्रीमियम की शेष राशि का 50 प्रतिशत केन्द्र सरकार तथा 50 प्रतिशत राज्य सरकार द्वारा अदा किया जाता है। फसल हानि होने पर कम से कम 25 प्रतिशत दावा राशि सीधे किसान के बैंक खाते में दी जाती है। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि प्रत्येक जिले में तहसीलवार, फसलवार तथा हल्कावार बीमा के प्रकरण तैयार किए जाते हैं। ऋणी और अऋणी किसान खरीफ फसल के लिए 16 अगस्त तक तथा रबी फसल के लिए 15 सितम्बर से 16 जनवरी तक फसल बीमा योजना के आवेदन बैंकों में जमा कर सकते हैं। बैंकों द्वारा खरीफ फसल के लिए 30 सितम्बर तक तथा रबी फसल के लिए 28 फरवरी तक बीमा प्रस्ताव संबंधित बीमा कंपनी को भेजना आवश्यक होगा। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में खरीफ फसल के लिए ऋणी किसान 15 सितम्बर तक एवं अऋणी किसान 22 अगस्त तक प्रीमियम की राशि जमा कर सकते हैं। रबी फसल के लिए ऋणी किसान 15 फरवरी एवं अऋणी किसान 22 जनवरी तक प्रीमियम राशि जमा कर सकते हैं। फसलों के पैदावार के आंकड़े के आधार पर आधुनिक तकनीक से फसल के नुकसान का आकलन किया जाता है। फसल कटाई प्रयोग से प्राप्त आंकड़े स्मार्ट फोन के माध्यम से अपलोड किए जाते हैं। जल भराव होने, चक्रवात और बेमौसम बारिश होने से फसलों को हानि होने पर भी बीमा सुरक्षा का लाभ दिया जाएगा।

लीवर की जाँच के लिए कार्यालयों में लगेंगे शिविर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्वस्थ लीवर मिशन के तहत नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर डिजीज की जाँच के लिए अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जिले भर में 30 जून तक शिविर लगाकर संदिग्ध रोगियों में मधुमेह, उच्च रक्तचाप, कोलेस्ट्रॉल, सीबीसी तथा लीवर की जाँच की जा रही है। अधिकारियों और कर्मचारियों के स्वास्थ्य की जाँच के लिए 20 से 30 जून तक विभिन्न कार्यालयों में शिविर लगाए जाएंगे। इस संबंध में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने बताया कि स्वस्थ लीवर मिशन 21 मई से चलाया जा रहा है। इसके तहत मुख्य रूप से फैटी लीवर की जाँच आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में की जा रही है। अधिकारियों और कर्मचारियों को फैटीलीवर जाँच की सुविधा देने के लिए 20 जून को कलेक्ट्रेट तथा नगर निगम के जोन कार्यालयों में शिविर लगाए जाएंगे। इसी तरह 23 जून को आईजी कार्यालय, एसपी कार्यालय, एसएएफ बटालियन, आयुर्वेद महाविद्यालय तथा केन्द्रीय जेल में शिविर लगेंगे। जिला चिकित्सालय तथा महिला एवं बाल विकास विभाग में 24 जून को तथा शिल्पी प्लाजा भवन में संचालित विभागीय कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों की जाँच के लिए 25 से 27 जून तक शिविर लगाए जाएंगे। इसी तरह 25 से 27 जून तक शिक्षा विभाग के तहत सभी सांदीपनि स्कूल एवं संकुल स्कूलों में तथा ग्रामीण आजीविका मिशन स्वसहायता समूहों के सदस्यों के लिए शिविर लगेगा। सभी शासकीय तथा निजी महाविद्यालयों, अन्य विभागीय कार्यालयों एवं आईटीआई रीवा में 28 से 30 जून तक शिविर लगेंगे। जिला आयुष कार्यालय में 24 जून को शिविर लगाया जाएगा। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी सभी शिविरों में स्वास्थ्य जाँच की समुचित व्यवस्था करें।

युवा संगम मेला का एक दिवसीय प्लेसमेंट ड्राइव आज मैहर में

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिला प्रशासन, जिला रोजगार कार्यालय सतना एवं शासकीय आईटीआई के सहयोग से 19 जून 2025 को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक शासकीय आईटीआई कॉलेज सरला नगर रोड कृषि उपज मण्डी के पास मैहर में युवा संगम रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें महिला एवं पुरूष आवेदक जो निर्धारित योग्यता पूरी करते है वह अपने मूल दस्तावेजों के साथ उपस्थित होकर योग्यता अनुसार रोजगार प्राप्त कर सकते है। इसमें कंपनी चैतन्य फाइनेंस, संजीव मोटर्स, आमधने प्राइवेट लिमिटेड, धूत ट्रांसमिशन प्राइवेट लिमिटेड, प्राकृतिशील एग्रोटेक प्राइवेट लिमिटेड, एमआरएफ इनफिनिटी कैरियर सोल्यूशन, देवा इंटर प्राइजेज, मदरशन सूमि, गोकलदास एक्सपोर्टस लिमिटेड, एसआईएस सिक्योरिटी सिंगरौली, एसजी सेवा संस्थान, लावा मोबाइल तथा रवीवा वर्क फोर्स प्राइवेट लिमिटेड में आदि पदों पर भर्ती की जावेगी। जिसमें 8 वीं, 10वीं, 12वीं, आईटीआई, डिप्लोमा, ग्रेजुएशन उत्तीर्ण बेरोजगार युवा रोजगार मेला में सम्मिलित होकर रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

युवा संगम रोजगार मेले में 174 आवेदको का प्राथमिक चयनः जिला प्रशासन एवं रोजगार कार्यालय के संयुक्त तत्वाधान में बुधवार को शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था सतना में युवा संगम रोजगार मेले का आयोजन किया गया। औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य ने बताया कि जिला स्तरीय युवा संगम रोजगार मेले कुल 358 आफ्लाइन एवं आनलाइन बेरोजगार युवक-युवतियों ने अपना पंजीयन कराया। मेले में 17 कंपनियों द्वारा पात्रता और अभिलेख परीक्षण पश्चात 174 आवेदकों का रोजगार के लिए चयन किया गया।

जिला स्तरीय बैंकर्स सलाहकार समिति की बैठक 20 जून को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभागार में 20 जून को शाम 4 बजे से जिला स्तरीय बैंकर्स सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की जा रही है। बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल मार्च तिमाही की उपलब्धियों, बैंकों के ऋण-जमा अनुपात, किसान क्रेडिट कार्ड बनाने तथा प्राथमिक क्षेत्र में निवेश की बैंकवार समीक्षा करेंगी। बैठक में विभिन्न विभागों की बैंकों के सहयोग से लागू स्वरोजगार योजनाओं के क्रियान्वयन की भी समीक्षा की जाएगी। अग्रणी बैंक प्रबंधक जगमोहन ने सभी बैंकर्स तथा संबंधित अधिकारियों से बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया है।

शिविर लगाकर बनाए जा रहे हैं आयुष्मान कार्ड

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार रीवा और मऊगंज जिले में आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए शिविर लगाए जा रहे हैं। शिविर 16 जुलाई तक लगाए जाएंगे। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संजीव शुक्ला ने बताया कि शिविर में वय वन्दना योजना, कर्मकार मण्डल तथा धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए 16 जुलाई तक अभियान चलाया जा रहा है। इसके साथ-साथ आंगनवाड़ियों में मंगलवार और शुक्रवार को टीकाकरण के उपरांत और शेष दिवसों में ग्राम पंचायत के सामुदायिक भवन पर आशा, रोजगार सहायक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के माध्यम से आपसी समन्वय से कार्ड बनाया जा रहा है। इच्छुक हितग्राही अपने क्षेत्र की आशा बहनों और रोजगार सहायक से संपर्क कर आयुष्मान कार्ड बनवा सकते हैं।

जिले में ग्रीष्म कालीन मूंग का पंजीयन आज से 5 जुलाई तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। भारत सरकार की प्राईस सपोर्ट स्कीम योजना अंतर्गत विपणन वर्ष 2025-26 में ग्रीष्म कालीन मूंग एवं उड़द की न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपार्जन के लिए पंजीयन 19 जून से 5 जुलाई 2025 तक किया जायेगा। प्रदेश के 33 जिलों में सतना जिला भी मूंग उत्पादक ज़िलों में शामिल हो गया है। जिले के किसान समर्थन मूल्य ग्रीष्मकालीन मूंग 8768 रूपये पर बेच सकेंगे। पंजीयन के अलावा पंजीयन केन्द्रों का निर्धारण, पंजीयन केन्द्रों पर भौतिक एवं मानव संसाधनों की व्यवस्था, कृषकों के पंजीयन एवं सत्यापन की प्रक्रिया, प्रचार-प्रसार एवं प्रशिक्षण तथा वित्तीय व्यवस्था तथा किसानों को फसल बेचने के लिए स्लाट चयन की प्रक्रिया ूएउचमपनचंतरंदण्दपबण्पद ई-उपार्जन पोर्टल पर रहेगी।

आरटीई प्रवेश प्रक्रिया का दूसरा चरण प्रारंभ हुआ 30 जून तक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के निर्देशानुसार निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 12 (1) (ग) के अंतर्गत मान्यता प्राप्त अशासकीय स्कूलों में निःशुल्क प्रवेश के लिए आनलाइन लाटरी की द्वितीय चरण की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए 20 जून 2025 तक आवेदकों द्वारा स्कूलों के च्वाइस को अपडेट किये जाने का कार्य किया जा सकेगा। द्वितीय चरण के लिए ऑनलाइन लाटरी 25 जून 2025 को की जायेगी। जिसमें प्रथम चरण से रिक्त सीटों में आवेदकों को स्कूल आवंटित की जायेगी। जिला परियोजना समन्वयक जिला शिक्षा अधिकारी ने बताया कि आवंटन के बाद स्कूल में प्रवेश एवं संबंधित स्कूल द्वारा प्रवेश की रिपोर्टिंग 25 जून से 30 जून 2025 तक की जा सकेगी। द्वितीय चरण की प्रवेश प्रक्रिया में ऐसे आवेदक पात्र होंगे। जिन्होंने प्रथम चरण में आवेदन किया हैं किन्तु कोई स्कूल आवंटित नहीं हुई है। इसके साथ ही ऐसे आवेदक जिनको प्रथम चरण में आवंटन प्राप्त हुआ है किन्तु स्कूल पसंद नहीं होने के कारण प्रवेश नहीं लिया है। द्वितीय चरण की प्रक्रिया में नवीन आवेदन पंजीयन नहीं होगा और न ही पुनः सत्यापन की प्रक्रिया की जायेगी।

संयुक्त परामर्श दात्री समिति की बैठक आज

सतना. जिला स्तरीय संयुक्त परामर्ष दात्री समिति की बैठक 19 जून को सायं 4 बजे से कलेक्ट्रेट भवन के सभाकक्ष में आयोजित की गई है। जिले के समस्त विभाग प्रमुखों से बैठक में अनिवार्य रूप से उपस्थित होने का आग्रह किया है।

माता पिता की प्रेरणा से पुत्र ने किया पहली बार रक्तदान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना एक और जहां भ्रांतियां के कारण लोग रक्तदान करने से बचते फिरते हैं वहीं दूसरी और ऐसे सुपुत्र भी हैं जो माता पिता की सेवा को देखते हुए स्वयं भी मानवता की सेवा करने के लिए उत्साह और खुशी के साथ रक्तदान कर रहे हैं समाजसेवी रेशमा संजय कोटवानी के सुपुत्र सुधांशु कोटवानी ने पहली बार रक्तदान कर पुनीत कार्य किया

उल्लेखनीय है युवा समाजसेवी एवं सिन्धु विकास समिति के अध्यक्ष विनोद गेलानी स्वयं 70 बार रक्तदान करते हुए युवाओं एवं मातृशक्ति को निरंतर रक्तदान करने के लिए प्रेरित करते हेश्री गेलानी की प्रेरणा से प्रेरित होकर हजारों रक्तदाताओं ने रक्त दान कर मानवता की सेवा की है रक्तदान करवाने मनीष सदानी जी का विशेष सहयोग रहा।

मीडिया प्रभारी अमित कामरानी ने बताया संस्था पिछले कई वर्षों से रक्तदान जीवनदान की अलख ज्योति जलाकर इंसानियत का धर्म निभाते हुए मानवता की सेवा कर रही है एवं अभी तक 6628 यूनिट रक्तदान करवाने का एक रिकॉर्ड भी कायम किया है।

कोटवानी जी के रक्तदान करने पर संस्था के संरक्षक श्री गोपी गेलानी श्रीचंद मनवानी मनोहर डिगवानी अध्यक्ष विनोद गेलानी ज्ञान खटवानी इंद्रलाल आडवाणी श्रीचंद शीतलानी घनश्याम मंघरानी संजय वाधवानी महेश रावलानी गंगाराम सचदेव दिलीप सोनी अमित कामरानी रंजीत सेनानी जितेंद्र गावरी गोपीचंद कापड़ी विजय जग्यासी अशोक चांदवानी बसंत खत्री दीपक वाधवानी केशव मखीजा राजेश कोटवानी राजकुमार साधवानी मनीष टेकवानी पंकज आहूजा मनीष सदानी बंटी भोजवानी मनोज सुखदानी सहयोगी आकाश बनर्जी मनमोहन माहेश्वरी विभाग बनर्जी आशीष मोगिया बसंत शर्मा निक्की मनचंदानी विशाल राजपाल संजय आहूजा बंसी नागदेव महिला मंडल से मोना चोपड़ा राखी होतचंदानी डॉ.मनीषा सोई डॉक्टर विद्या पांडे,आर्य खिलवानी मुस्कान चंदानी सिमरन होतचंदानी निशा गोयल आभा सिंह जया जायसवाल रशिम जैन प्रेरणा जादवानी अनामिका सोनी ने कोटवानी जी को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है।

एस.आर.आई. विधि से धान की रोपाई किसानों के लिये वरदान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में काफी बड़े क्षेत्र में धान की खेती की जाती है। अधिकतर किसान रोपा विधि से धान लगाते हैं। इसकी तुलना में मेडागास्कर विधि जिसे एस.आर.आई. विधि कहा जाता हैं, से धान लगाना अधिक लाभकारी है। इसमें कम पानी, कम बीज और बिना खरपतवार के धान का अच्छा उत्पादन होता हैं। परम्परागत विधि से किसान को प्रति हेक्टेयर 20 से 25 क्विंटल धान की उपज मिलती है। इसकी तुलना में विधि से धान लगाने पर प्रति हेक्टेयर 35 से 50 धक्कटल धान का उत्पादन होता है। उप संचालक यूपी बागरी कृषि ने किसानों से धान रोपण के लिये विधि अपनाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि यह तकनीक किसानों के लिये वरदान है।

उप संचालक यूपी बागरी ने बताया कि विधि से प्रति हेक्टेयर केवल 6 से 8 किलो बीज की जरूरत होती है। इसे विशेष तरह की प्लेट अथवा पॉलीथीन में नर्सरी लगाकर तैयार किया जाता है। इसमें भुरभुरी मिट्टी तथा राख का होना आवश्यक है। इसके लिये 10 मीटर लम्बी तथा 5 से.मी. ऊंची क्यारी बनायें। इसमें 50 किलो नाडेप अथवा गोबर की खाद मिलाकर बीजों की बोनी करें। बोनी से पहले बीजों को थाईरम दवा से उपचारित करें। प्रत्येक क्यारी में 120 ग्राम बीज की बोनी करें। इन्हें ढंककर हल्की सिंचाई करें। धान रोपित करने के लिये खेत को गहरी जुताई करके उसके खरपतवार नष्ट करें। खेत में पर्याप्त पानी देकर रोपाई के लिये खेत तैयार करें। इसमें नर्सरी में तैयार धान के 15 से 21 दिन के पौधे रोपित करें। तैयार खेत में मार्कर हल की सहायता से 20-20 से.मी. दूरी पर निशान बनायें। इन निशानों पर धान का केवल एक पौधा रोपित करें।

उन्होंने किसानों को सलाह देते हुए कहा कि पौधे से पौधे तथा कतार से कतार की दूरी 2 से.मी. रखें। पौधों के बीच में पर्याप्त अंतर होने पर उन्हें पर्याप्त हवा तथा नमी प्राप्त होगी। कतार में पर्याप्त दूरी रहने पर खरपतवार होने की स्थिति में कोनावीडर की सहायता से इन्हें आसानी से निकालकर खाद बनायी जा सकती हैं। मृदा हेल्थ कार्ड में खेत की मिट्टी में पोषक तत्वों के अनुसार खाद का उपयोग करें। इसमें गोबर की खाद नाडेप तथा वर्मी खाद का अधिक उपयोग करें। धान रोपित करने के 15 दिन बाद कम मात्रा में यूरिया का छिड़काव किया जा सकता हैं।

विधि से धान लगाने पर खेत में पानी भरने की जरूरत नही होती है। लेकिन खेत में नमी बनी रहे इसकी व्यवस्था करें। जिस समय धान के पौधो में वृद्धि हो रही हो उस समय खेत को 2 से 3 दिनों के लिये सूखा छोड़ देना चाहिये। इसके बाद पुनः हल्की सिंचाई करके खेत को नम करना चाहिये। इस विधि से किसान 35 से 50 धक्कटल तक धान प्राप्त कर सकते हैं। इसके संबंध में किसान कृषि विस्तार अधिकारी से भी जानकारी प्राप्त कर सकते है।

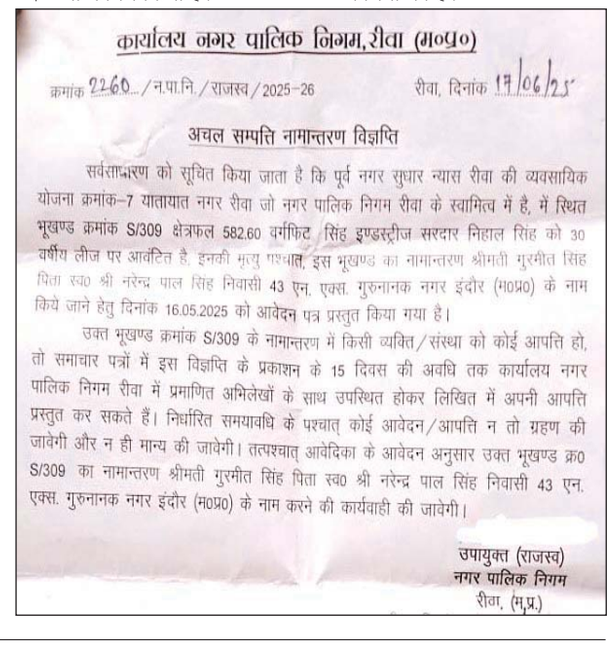

कार्यालय नगर पालिक निगम, रीवा (म0प्र0)

क्रमांक 2260 /न.पा.नि./राजस्व/2025-26 रीवा, दिनांक 17/06/25

अचल सम्पत्ति नामान्तरण विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पूर्व नगर सुधार न्यास रीवा की व्यवसायिक योजना क्रमांक-7 यातायात नगर रीवा जो नगर पालिक निगम रीवा के स्वामित्व में है, में स्थित भूखण्ड क्रमांक S/309 क्षेत्रफल 582.60 वर्गफिट सिंह इण्डस्ट्रीज सरदार निहाल सिंह को 30 वर्षीय लीज पर आवंटित है, इनकी मृत्यु पश्चात् इस भूखण्ड का नामान्तरण श्रीमती गुरमीत सिंह पिता स्व0 श्री नरेन्द्र पाल सिंह निवासी 43 एन. एक्स. गुरुनानक नगर इंदौर (म0प्र0) के नाम किये जाने हेतु दिनांक 16.05.2025 को आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

उक्त भूखण्ड क्रमांक S/309 के नामान्तरण में किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति हो, तो समाचार पत्रों में इस विज्ञप्ति के प्रकाशन के 15 दिवस की अवधि तक कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा में प्रमाणित अभिलेखों के साथ उपस्थित होकर लिखित में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि के पश्चात् कोई आवेदन/आपत्ति न तो ग्रहण की जावेगी और न ही मान्य की जावेगी। तत्पश्चात् आवेदिका के आवेदन अनुसार उक्त भूखण्ड क्र0 S/309 का नामान्तरण श्रीमती गुरमीत सिंह पिता स्व0 श्री नरेन्द्र पाल सिंह निवासी 43 एन. एक्स. गुरुनानक नगर इंदौर (म0प्र0) के नाम करने की कार्यवाही की जावेगी।

उपायुक्त (राजस्व)
नगर पालिक निगम
रीवा, (म.प्र.)

विचार

ईरान-इजरायल युद्ध से दुनिया के सामने नई चुनौती

इजरायल ने ईरान के 'परमाणु कार्यक्रम ठिकानों' पर अचानक हमला करके न सिर्फ दुनिया को चौंका दिया है बल्कि पश्चिमी एशिया के पूरे क्षेत्र को अनिश्चितता, भय, अशांति एवं संकट के भंवर में डाल दिया है। ईरान जवाबी कार्रवाई करते हुए इजरायल को करारा जवाब दे रहा है। जहां इस्त्राइल इन हमलों को अपने अस्तित्व को बचाने की कार्रवाई बता रहा है, वहीं ईरान जवाबी कार्रवाई कर शीघ्र बदला लेने की बात कर रहा है। लेकिन इन दो राष्ट्रों के संघर्ष एवं युद्ध में समूची दुनिया पीस रही है। एक और युद्ध से दुनिया में विकास का रथ थमेगा, महंगाई बढ़ेगी, तेल के दाम आसमान छूने लगेंगे, व्यापक जनहानि होगी। युद्ध कभी भी किसी के हित में नहीं होता, आखिर समझौते के लिये टेबल पर बैठना ही होता है, तो पहले ही टेबल पर क्यों न बैठा जाये? विनाश एवं सर्वनाथ करने के बाद युद्ध विराम करना कैसे बुद्धिमत्ता है? इजरायल ने ईरान के खिलाफ अपनी कार्रवाई को ऑपरेशन राइजिंग लायन नाम दिया है, जो बताता है कि यह अपने आप में महज एक कार्रवाई नहीं बल्कि नया सिलसिला हो सकता है। हमलों का व्यापक एवं विनाशकारी रूप भी इसकी गंभीरता को स्पष्ट कर देता है। कम से कम छह राउंड में किए गए हवाई हमलों के तहत ईरान के परमाणु कार्यक्रम ठिकानों को निशाना बनाया गया। यही नहीं, ईरान के सबसे बड़े सैन्य अधिकारी इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स के चीफ हुसैन सलामी के भी मारे जाने की खबर है। ईरान ने तो जवाबी कार्रवाई का इरादा जता ही दिया है, खुद इजरायल सरकार ने भी अपने नागरिकों से अगले कुछ दिन घरों के अंदर रहने और खाने-पीने का सामान इकट्ठा कर लेने को कहा है। इजरायली कार्रवाई के वैश्विक दुष्प्रभावों का संकेत इसी एक तथ्य से मिल जाता है कि पहले हमले के कुछ घंटों के अंदर अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें 13 प्रतिशत बढ़ गईं। दुनिया के शैयर बाजार धराशायी हो गये हैं। इसमें दो राय नहीं कि इजरायल लंबे समय से कहता रहा है कि ईरान को परमाणु हथियार विकसित करने से हर हाल में रोका जाए और जरूरी हो तो उसके लिए बल प्रयोग से भी हिचका न जाए। उसका कहना है कि ईरान इस स्थिति में आ गया था कि कुछ दिनों के अंदर 15 परमाणु बम बना सकता था। एक भयानक संशय का वातावरण बना हुआ है। पहले रूस-यूक्रेन, इजरायल-हमाम, कुछ समय भारत-पाक और अब इजरायल-ईरान के बीच युद्ध की स्थितियां बनना विश्व युद्ध की संकटपूर्ण स्थितियों को बल दे रही है। संशय से भरा हुआ आदमी प्रेम एवं मानवीयता से खाली होता है। पारस्परिक स्नेह, सद्भाव, सौहार्द और विश्वास के अभाव में उसका संदेहशील मन सदैव युद्ध, हिंसा, सुरक्षा के साधन जुटाने में संलग्न रहता है। उसका मन कभी निर्भय नहीं होता, वृत्तियां शान्त नहीं होतीं, संग्रह उसके सुख, संतोष और शांति को सुरसा बन लील जाता है। जिसने परमाणु-शस्त्रों के निर्माण और फैलाव से विश्व को तनाव और संत्रास का वातावरण दिया, अनिश्चय और असमंजस की विकट स्थिति दी, उसने विश्व शांति के धरातल छिन लिया है। इन विनाशकारी स्थितियों में मानवीय सहृदयता, सहिष्णुता और सह-अस्तित्व की भावना को कैसे अक्षुण्ण रखा जा सकता है? अभय का वातावरण, शुभ की कामना और मंगल का फैलाव कर तीसरी दुनिया को विकास के समुचित अवसर और साधन देने की संभावनाएं कैसे बलशाली बन सकती है?

साइप्रस यात्रा के जरिए तुर्की को कूटनीतिक जवाब

ऑपरेशन सिंदूर के बाद एक टीवी चैनल के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी से पूछा गया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर भारत की कार्रवाई इतनी सटीक यों रही? पाकिस्तान की खुफिया सेवा इसे भांप यों नहीं पाई, पाकिस्तानी राजनेता और सेना यों भारतीय कार्रवाई का अंदाजा नहीं लगा पाए। सवाल खत्म होते ही प्रधानमंत्री ठठाकर हंस पड़े। हंसते हुए उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी सेना और राजनीति भारत के विपक्षी दलों की ही तरह हैं। जिस तरह वे मेरे बारे में अंदाजा नहीं लगा सकते, कुछ उसी तरह पाकिस्तानी भी अंदाजा नहीं लगा सकते।

दिल्ली में केंद्रीय सत्ता संभालने के बाद प्रधानमंत्री मोदी के कदमों को देखिए। हर बार वे चौंकाते रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर के बाद जब समूचा विपक्ष भारत सरकार की विदेश नीति की नाकामी को लेकर मोदी सरकार पर निशाना लगा रहा था, प्रधानमंत्री ने साइप्रस की यात्रा करके देश को चौंका दिया है। भूमध्य सागर के द्वीपीय देश साइप्रस की यात्रा का अचानक से ऐलान होना और कनाडा जाते हुए रास्ते में प्रधानमंत्री मोदी का साइप्रस उतरना और वहां के शीर्ष नेताओं से मिलना भारतीय विदेश नीति का चौंकाऊं फैसला ही है। देश के शीर्ष नेताओं की विदेश यात्राएं अरसा पहले से तय होती हैं, उसकी जानकारी राजनीति के साथ ही पत्रकारिता को भी होती है। लेकिन प्रधानमंत्री की साइप्रस यात्रा अचानक से हुई है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने प्रधानमंत्री की साइप्रस यात्रा का 14 मई को अचानक ऐलान किया। साइप्रस की राजधानी निकोसिया में प्रधानमंत्री मोदी ने वहां के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलाइड्स से बातचीत भी की। ऐसे में सवाल यह उठ सकता है कि साइप्रस की यह अचानक यात्रा क्यों ?

इस सवाल के जवाब में एक बार फिर ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हुई घटनाओं की ओर लौटना होगा। याद कीजिए, तब पाकिस्तान ने भारत पर ड्रोन के जरिए सैकड़ों हमले किए थे। उन हमलों को बेशक भारत के एयर डिफेंस सिस्टम ने नाकाम कर दिया। साइप्रस की यात्रा के लिए हमें उन हमलों में इस्तेमाल हुए ड्रोन को देखना होगा। पाकिस्तान ने जिन ड्रोन से हमले किए, ज्यादातर तुर्की में बने सोनगार ड्रोन थे। हवाई हमलों में तुर्की के इन ड्रोन को बेहद मारक माना जाता है। हालांकि वे भारतीय एयर डिफेंस सिस्टम के सामने बेकार ही साबित हुए। कूटनीतिक हलकों को पता है कि तुर्की के राष्ट्रपति रेचेप तैय्यप अर्दोआन ने पाकिस्तान को उपलब्ध कराया। अर्दोआन ने पर्दे के पीछे से पाकिस्तान का साथ दिया। इतना ही नहीं, भारत ने जब इस बात को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने रखा तो अर्दोआन ने ट्वीटर पर 'पाकिस्तान-तुर्की दोस्ती जिंदाबाद' लिखकर एक तरह से भारत के आरोप को साबित कर दिया। इसे भारत को मुंह चिढ़ाना भी कह सकते हैं। यह उस तुर्की का कदम था, जिसे भारत ने दो साल पहले दिल खोलकर मानवीय आधार पर सहयोग दिया था। छह फरवरी 2023 को तुर्की में 7.8 तीव्रता का भूकंप आया था, उस झटके में तुर्की में 53 हजार लोगों की मौत हो गई थी, हजारों लोग घायल हो गए थे। जान-माल के भारी नुकसान के बाद भारत ने मानवीय सहायता के साथ ही विशेषज्ञों की टीम के साथ बचाव दल भेजा था। राहत के तुर्की पहुंचने वाली टीमों में भारत की टीम भी शामिल थी। तुर्की के राष्ट्रपति ने जब ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान से दोस्ती को जगजाहिर किया तो उसे भारत के लोगों ने भारत के लिए मुंह चिढ़ाना माना। रही-सही कसर पूरी हुई मई के आखिर में पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ की तुर्की की यात्रा से। तब भारत के सामने अर्दोआन के रूख को लेकर कोई गुंजाइश ही नहीं रही। तुर्की को लेकर भारतीय समुदाय की सोच अब भी ऐसी ही है। ऐसा नहीं कि पहली बार तुर्की ने भारत के खिलाफ पाकिस्तान का पक्ष लेते हुए ऐसा कदम उठाया है। संयुक्त राष्ट्र संघ समेत कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान के पक्ष में अर्दोआन सहयोगी भूमिका पेश करते रहे हैं। इन वजहों से तुर्की को लेकर भारत में गुस्सा भी बहुत रहा है। कश्मीर के मसले पर तुर्की हर बार पाकिस्तान के साथ ही खड़ा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी का साइप्रस दौरा भारत के उसी गुस्से की अभिव्यक्ति और भारत को मुंह चिढ़ाने के अर्दोआन के प्रयासों का जवाब माना जा सकता है। इसकी वजह है कि साइप्रस और तुर्की के बीच जारी बरसों पुराना विवाद। साइप्रस में यूनानी और तुर्की मूल के लोग रहते हैं। तुर्की के दोनों समुदायों में नस्ली आधार पर विवाद रहा है। साइप्रस में साल 1974 में तत्कालीन सरकार के खिलाफ यूनानी मूल के आतंकी समूहों ने तख्तापलट की कोशिश की। इसे तुर्की ने अपने लोगों के खिलाफ युद्ध माना। इसके बाद तुर्की ने साइप्रस पर हमला कर दिया। इस दौरान तुर्की की सेनाओं ने साइप्रस के दूसरे नंबर के मशहूर शहर वरोशा पर कब्जा कर लिया। यह शहर अपने बहुमंजिला भवनों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहां पूरे साल सैलानी आते रहते थे। लेकिन जब से तुर्की के कब्जे में यह शहर है, सैलानियों के लिए तरस रहा है। तुर्की की सेना के 35 हजार जवान यहां तैनात हैं। इसके बाद से एक तरह से यह द्वीपीय देश दो हिस्सों में बंट गया है। तुर्की के कब्जे वाले इलाके को तुर्की ने राष्ट्र का दर्जा दे रखा है। दिलचस्प है कि इस राष्ट्र के अस्तित्व को तुर्की के अलावा कोई देश स्वीकार नहीं करता। साइप्रस यूरोपीय संघ का भी सदस्य है और एक जनवरी 2026 से वह संघ का अध्यक्ष बनने जा रहा है। भारत और यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौते को लेकर बातचीत चल रही है। भारत को उम्मीद है कि साइप्रस के अध्यक्ष रहते यूरोपीय संघ और भारत के बीच मुक्त व्यापार समझौता हो जाएगा। साइप्रस ने कई मौकों पर भारत की संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट की दावेदारी का समर्थन कर चुका है।

मोदी ने साइप्रस जाकर दो संदेश देने की कोशिश की है। पहला संदेश तुर्की के लिए है। भारत ने जता दिया है कि वह साइप्रस को सहयोग देगा और साइप्रस से सहयोग लेगा। वैसे भी साइप्रस के आईटी उद्योग और पर्यटन में भारत के हजारों लोग कार्यरत हैं। साइप्रस स्थित भारतीय हाईकमीशन के मुताबिक साइप्रस में साढ़े ग्यारह हजार लोग रहते हैं। मोदी की साइप्रस यात्रा का दूसरा संदेश भारतीयों के लिए है। पहले भारत से बहुत सारे सैलानी तुर्की जाते थे, लेकिन अब वे साइप्रस जाएंगे। वैसे पाकिस्तान के सहयोग के खुलासे के बाद से ही तुर्की के लिए बुक टिकटों को भारतीयों ने कैंसल कराना शुरू कर दिया था। मोदी की कोशिश साइप्रस को बढ़ाकर तुर्की की आर्थिक रीढ़ पर चोट पहुंचाना है। साथ ही तुर्की को संदेश देना है कि जरूरत पड़ने पर भारत तुर्की के खिलाफ कड़े कदम भी उठा सकता है।

प्रधानमंत्री ने कनाडा जाते हुए साइप्रस की यात्रा से तुर्की को भी चौंकाया है। तुर्की के राष्ट्रपति अर्दोआन ने 2021 में कहा था कि साइप्रस की जिम्मेदारी तुर्की की है। यानी एक तरह से वह साइप्रस के एकीकरण के संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्ताव के खिलाफ हैं। हालांकि अर्दोआन के कदम का इजरायल कड़ा विरोध करता है। साइप्रस की मौजूदा सरकार के साथ इजरायल मजबूती से खड़ा है। जाहिर है कि तुर्की के कदम का इजरायल विरोध कर रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री की साइप्रस की यात्रा के बाद इजरायल, भारत और साइप्रस संबंधों को भी गति मिलने की संभावना है। दुनिया इन दिनों चीन के 'वन बेल्ट-वन रोड' के जवाब में मध्य पूर्व के देशों के साथ यूरोप 'इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर' यानी आईएमईसी पर काम कर रहा है। भारत की साइप्रस यात्रा इस कॉरीडोर में भारत की संभावनाओं की भी खोज करती है। साइप्रस जाने वाली पहली भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी रहीं, जिन्होंने 1983 में इस देश का दौरा किया था, इसके उन्नीस साल बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने साइप्रस की यात्रा की थी। इसके 23 साल बाद मोदी की यात्रा हो रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की साइप्रस यात्रा के मायने

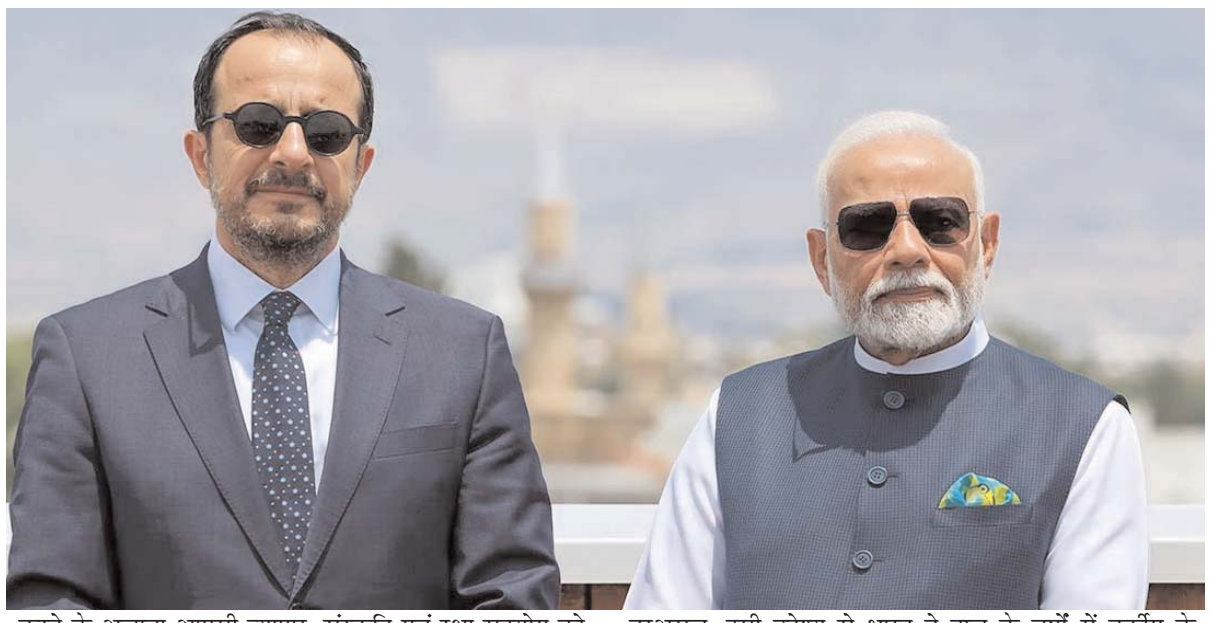

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी साइप्रस, कनाडा और क्रोएशिया की अपनी अत्यंत महत्वपूर्ण यात्रा के पहले चरण में यूरोपीय संघ के सदस्य देश साइप्रस पहुंचे, जो भारत का पुराना मित्र भी है। राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडुलाइड्स ने हवाई अड्डे पर पहुंचकर उनका जोरदार स्वागत किया। बाद में, उन्होंने पीएम मोदी को वहां के सर्वोच्च सम्मान से अलंकृत भी किया, जो भारत और साइप्रस के प्रगाढ़ होते संबंधों को दर्शाता है। पीएम मोदी की तीन देशों की इस यात्रा का प्रमुख उद्देश्य भारत के वैश्विक संबंधों को मजबूत करना, आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना तथा वैश्विक दक्षिण (ग्लोबल साउथ) की प्राथमिकताओं को लेकर कूटनीतिक प्रयासों को और तेज करना है। देखा जाए तो उपर्युक्त तीन देशों में भी साइप्रस का भारत के लिए अत्यंत विशेष महत्व है। हालांकि, अब तक हमने इस ओर कम ही ध्यान दिया है। तभी तो, लगभग 22 वर्षों के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने साइप्रस का आधिकारिक दौरा किया है। इससे पहले 1983 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने और 2002 में प्रधानमंत्री रहते अटल बिहारी वाजपेयी ने रिपब्लिक ऑफ साइप्रस की आधिकारिक यात्रा की थी। बहरहाल, पीएम मोदी के साइप्रस दौरे से दोनों देशों के संबंधों में आई मधुरता, एकजुटता और आपसी सहयोग की भावना आने वाले समय में तुर्कीए की नींद हराम करने वाली साबित होगी, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए।

दरअसल, पीएम मोदी के इस दौरे का उद्देश्य केवल भारत और साइप्रस के बीच मित्रता को बढ़ाना नहीं, बल्कि भारत के खिलाफ विशेषकर कश्मीर के मुद्दे पर खुलकर बोलते रहने वाले एवं पाकिस्तान को सैन्य तथा कूटनीतिक समर्थन और सहयोग प्रदान करते रहने वाले साइप्रस के पड़ोसी तुर्कीए को सख्त संदेश देना भी है कि भारत उसकी हरकतों का जवाब देना अच्छी तरह से जानता है। वहीं, भारत का साइप्रस के साथ खड़े होना तुर्कीए के लिए साफ संदेश है कि भारत उसके खिलाफ उन देशों का समर्थन कर करता रहेगा, जो तुर्कीए की आक्रामकता से परेशान हैं। तात्पर्य यह कि भारत ने तुर्कीए की दुखती रग पर हाथ रख दिया है। साथ ही, पीएम मोदी की इस यात्रा से यह उम्मीद भी जगी है कि यह दोनों देशों के बीच की मित्रता को और प्रगाढ़ करने के अलावा आपसी व्यापार, संस्कृति एवं रक्षा सहयोग को बढ़ावा देने में भी प्रभावी साबित होगा। यह उम्मीद निराधार भी नहीं है, क्योंकि साइप्रस की भौगोलिक स्थिति इसे भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण बनाती है। बता दें कि यह भूमध्य सागर में तुर्कीए के दक्षिण में, लेवांत (सीरिया-लेबनान-फिलिस्तीन-इजरायल) के पश्चिम में और स्वेज नहर के निकट स्थित है। यानी साइप्रस यूरोप, एशिया और अफ्रीका के बीच एक अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव है, जो भारत-मध्य-पूर्व-यूरोप कॉरिडोर (आइएमईसी) के लिए एक बेहद महत्वपूर्ण कड़ी साबित हो सकता है।

आइएमईसी एक ऐसा व्यापारिक कॉरिडोर अथवा रास्ता है, जो भारत को मध्य-पूर्व के रास्ते यूरोप से जोड़ सकता है। यदि साइप्रस को इस कॉरिडोर में शामिल कर लिया जाए तो न केवल व्यापारिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने, बल्कि तुर्कीए की अनपेक्षित हेकड़ी को बंद करने में भी सफलता मिल सकती है। दरअसल, इसी उद्देश्य से भारत ने हाल के वर्षों में तुर्कीए के तमाम विरोधी देशों, जिनमें ग्रीस, आर्मेनिया, मिस्र और साइप्रस के साथ अपने संबंधों को मजबूती प्रदान करने के प्रयास किए हैं। इस क्रम में ग्रीस, आर्मेनिया, और मिस्र के साथ मित्रता एवं व्यापारिक तथा सामरिक संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से पीएम मोदी उन देशों के दौरे पहले ही कर चुके हैं। अब, उनकी यह साइप्रस यात्रा तुर्कीए को चारों तरफ से घेरने के भारत के रणनीतिक अभियान का ही एक हिस्सा प्रतीत होती है। वैसे, भारत के लिए साइप्रस की मित्रता हमेशा से बेहद महत्वपूर्ण रही है। बता दें कि संकट काल में साइप्रस ने हमेशा भारत का साथ दिया है, चाहे 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण के बाद का समय हो, जब हम दुनिया में अलग-थलग पड़ने लगे थे या 2008 में भारत-अमेरिका परमाणु समझौते के समय अथवा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता के लिए वैश्विक समर्थन जुटाने का मामला हो। इसके अतिरिक्त, आतंकवाद और कश्मीर जैसे मुद्दों पर भी साइप्रस ने पाकिस्तान या तुर्कीए के बजाए हमेशा भारत का साथ दिया है।

वहीं, भारत भी हमेशा से साइप्रस की एकता और अखंडता का समर्थन करता रहा है, बल्कि भारत की तो यह मांग रही है कि साइप्रस का मुद्दा संयुक्त राष्ट्र के नियमों और अंतरराष्ट्रीय कानूनों के अंतर्गत हल किया जाए। बता दें कि साइप्रस और तुर्कीए का संघर्ष 1974 से ही चला आ रहा है, जब ग्रीस के समर्थन से साइप्रस में तख्तापलट हुआ था, ताकि साइप्रस को ग्रीस के साथ मिलाया जा सके। यही वह समय था, जब तुर्कीए ने साइप्रस के उत्तरी हिस्से पर हमला कर उसे अपने कब्जे में ले लिया था, जिसके बाद से ही साइप्रस दो भागों में बंटा हुआ है। साइप्रस का दक्षिणी भाग 'ग्रीक साइप्रियट्स' अथवा 'रिपब्लिक ऑफ साइप्रस' कहलाता है, जिसे विश्व भर के देशों से मान्यता मिली हुई है। वहीं, इसका उत्तरी भाग 'तुर्की साइप्रियट्स' के नाम से जाना जाता है। इसे तुर्कीए ने 'तुर्की रिपब्लिक ऑफ नॉर्दर्न साइप्रस' घोषित किया हुआ है, लेकिन इसे अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त नहीं है। तुर्कीए ने उत्तरी साइप्रस में अपनी सेना तैनात कर रखी है और समय-समय पर वहां की समुद्री सीमाओं पर भी अतिक्रमण करने का प्रयास करता रहता है। गौरतलब है कि साइप्रस की धरती में 12-15 ट्रिलियन क्यूबिक फीट प्राकृतिक गैस का भंडार मौजूद है, जिस पर तुर्कीए कब्जा करना चाहता है। इतना ही नहीं, तुर्कीए के हस्तक्षेप के कारण साइप्रस को अपनी ही गैस को निर्यात करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यहां तक कि तुर्कीए साइप्रस के समुद्री क्षेत्र में अपने जहाज भेजकर गैस खोजने की कोशिशें भी कर चुका है, जिससे साइप्रस, ग्रीस और यूरोपीय संघ के साथ उसका तनाव बढ़ने की खबरें भी आती रही हैं। दरअसल, तुर्कीए का मानना है कि साइप्रस जैसे छोटे-से द्वीप को इतना बड़ा समुद्री क्षेत्र (ईईजेड) नहीं मिलना चाहिए। तुर्कीए के ये तमाम प्रयास ईईजेड से संबद्ध अंतरराष्ट्रीय कानूनों के खिलाफ हैं। जाहिर है कि यदि भारत साइप्रस के साथ संस्कृति, ऊर्जा, व्यापार या बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाता है, तो यह तुर्कीए के लिए बहुत बड़ा झटका साबित हो सकता है।

धरती आबा अभियान का हुआ शुभारंभ, जनजातीय गांवों तक पहुंचेगी विभिन्न योजनाओं की रोशनी

17 से 30 जून तक विशेष शिविरों के माध्यम से होगा जनजातीय समुदायों का समावेशी विकास

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना "धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान" के तहत मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में 17 जून से 30 जून 2025 तक विशेष ग्राम स्तरीय विकास शिविरों की शुरुआत की गई है। इन शिविरों का उद्देश्य जिले के जनजातीय समुदायों को केंद्र एवं राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से प्रत्यक्ष रूप से जोड़कर उनका समावेशी, समग्र एवं सतत विकास सुनिश्चित करना है। इस महत्त्वपूर्ण अभियान का शुभारंभ जिला कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशन में किया गया। अभियान के तहत जिले के तीनों विकासखंड मनेन्द्रगढ़, खडगवां और भरतपुर के कुल 151 चिन्हित जनजातीय ग्रामों को क्लस्टर के रूप में विभाजित कर, गांव-गांव जाकर विकास शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इस अभियान के प्रथम दिन मनेन्द्रगढ़ विकासखंड के ग्राम पंचायत डुगला एवं खडगवां विकासखंड के ग्राम पंचायत बोड़ेमुड़ा में शिविरों का आयोजन किया गया, जहां ग्रामीणों की उल्लेखनीय सहभागिता देखने को मिली। ग्रामीणों ने सरकार की योजनाओं के प्रति गहरी जिज्ञासा एवं उत्साह दिखाया, जिससे शिविरों में सकारात्मक माहौल बना रहा। इन शिविरों के माध्यम से केंद्र सरकार के 17 मंत्रालयों की 25 प्रमुख जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी आमजन को दी जा रही है तथा पात्र लाभार्थियों को तत्काल लाभ भी प्रदान किया जा रहा है। इनमें प्रमुख योजनाओं में शामिल हैं - आधार कार्ड, राशन कार्ड, जाति एवं निवास प्रमाण पत्र, आयुष्मान भारत योजना, पीएम किसान सम्मान निधि, किसान क्रेडिट कार्ड, प्रधानमंत्री जनधन योजना, वृद्धावस्था/विधवा/दिव्यांग पेंशन योजनाएं, नरेगा जॉब कार्ड, पीएम विश्वकर्मा योजना, मुद्रा लोन, एवं मातृ व शिशु स्वास्थ्य सेवाएं। अभियान का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समुदायों को शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी सुविधाओं और आजीविका के क्षेत्रों में सशक्त बनाना है, ताकि वे आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो सकें। इसके लिए जिला प्रशासन द्वारा अभियान की सतत निगरानी की जा रही है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि योजनाओं का लाभ समयबद्ध और पारदर्शी ढंग से पात्र जनों तक पहुंचे। शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी, पंचायत प्रतिनिधि एवं फील्ड कर्मचारी सक्रिय रूप से सहभागी बनकर जनसेवा में तत्पर हैं। ग्रामीणों में इस अभियान को लेकर विशेष उत्साह देखा जा रहा है, जो सरकार और समाज के बीच विश्वास एवं सहभागिता को और अधिक मजबूत कर रहा है।

"धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान" न केवल जनजातीय क्षेत्रों के विकास की दिशा में एक सार्थक पहल है, बल्कि यह सामाजिक समरसता, समावेशन और अंतिम व्यक्ति तक विकास की पहुंच को मूर्त रूप देने का सशक्त माध्यम भी बनता जा रहा है।

रीवा/सतना की खबरें

ग्राम पंचायत भलौर में समूह की बैठक के साथ स्वच्छता पहल को भी मिला नया आयाम

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेन्द्रगढ़ विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत भलौर में स्वच्छता एवं ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। पंचायत के सचिव एवं सरपंच की उपस्थिति में ग्राम के स्व-सहायता समूहों के साथ बैठक आयोजित की गई, जिसमें ग्राम की सफाई व्यवस्था को और अधिक व्यवस्थित एवं सुदृढ़ बनाने के लिए ठोस निर्णय लिए गए। इस बैठक में सामुदायिक भागीदारी को प्राथमिकता देते हुए यह निर्णय लिया गया कि गांव में कचरा संग्रहण (कलेक्शन) की प्रक्रिया को समूह की सहायता से प्रारंभ किया जाएगा, ताकि गांव की गलियों और सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता बनी रहे और जनस्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़े। इस पहल के तहत अब समूह की महिलाएं नियमित रूप से घर-घर जाकर कचरा इकट्ठा करेंगी और उसे निर्धारित स्थान पर सुरक्षित ढंग से संग्रहित करेंगी। इससे जहां एक ओर गांव में सफाई बनी रहेगी, वहीं दूसरी ओर महिला समूहों को आय का एक स्थायी स्रोत भी प्राप्त होगा। यह निर्णय ग्राम की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। इसके साथ ही पंचायत द्वारा निर्मित सामुदायिक शौचालय परिसर में स्थित दुकान को भी संचालन हेतु महिला समूह को सौंपा गया है। यह कदम महिलाओं को रोजगार मुहैया कराने के साथ-साथ स्वच्छता अभियान को स्थायित्व प्रदान करेगा। अब यह समूह दुकान के माध्यम से स्वच्छता से जुड़ी सामग्री की बिक्री करेगा तथा परिसर की देखरेख एवं स्वच्छता सुनिश्चित करेगा। ग्राम पंचायत भलौर की यह पहल न केवल स्वच्छ भारत मिशन के उद्देश्यों को साकार करने की दिशा में एक प्रेरणादायी उदाहरण है, बल्कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में समुदाय आधारित विकास मॉडल की भी एक प्रभावशाली झलक प्रस्तुत करता है। ग्रामवासियों में इस निर्णय को लेकर उत्साह का वातावरण है और वे आशा जता रहे हैं कि आने वाले दिनों में पंचायत और समूहों की यह संयुक्त भागीदारी गांव को स्वच्छ, सुंदर और आत्मनिर्भर बनाने में मील का पत्थर साबित होगी।

जिला न्यायाधीश के नेतृत्व में उप जेल का डिस्ट्रिक्ट विज़िटर्स बोर्ड ने किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अध्यक्षता में डिस्ट्रिक्ट विज़िटर्स बोर्ड द्वारा उप जेल मनेंद्रगढ़ का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर जेल में बंद कैदियों की स्थिति, उपलब्ध सुविधाएं एवं विधिक सहायता की व्यवस्थाओं की बारीकी से समीक्षा की गई। इस निरीक्षण के दौरान यह पाया गया कि कुछ बंदियों को अभी तक विधिक सहायता उपलब्ध नहीं हो सकी है। इस पर न्यायाधीश ने संबंधित अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि ऐसे सभी जरूरतमंद कैदियों को अविलंब विधिक सहायता उपलब्ध कराई जाए, ताकि उन्हें न्याय पाने का अधिकार सुनिश्चित किया जा सके। वहीं निरीक्षण में साफ-सफाई, भोजन, चिकित्सा, शिक्षा एवं मनोरंजन जैसी मूलभूत सुविधाओं की भी जांच की गई। जिला न्यायाधीश ने जेल प्रशासन को निर्देशित किया कि कैदियों को संविधान प्रदत्त सभी मौलिक सुविधाएं सुनिश्चित रूप से दी जाएं। जेल परिसर की व्यवस्था को और बेहतर बनाने हेतु भी आवश्यक सुझाव दिए गए। इस महत्वपूर्ण निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व), मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी, कार्यपालन अभियंता (पीडब्ल्यूडी), महाप्रबंधक (डीटीआईसी), जिला रोजगार अधिकारी एवं एसडीओ (कृषि) सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। निरीक्षण के पश्चात अधिकारियों ने जेल प्रशासन के साथ समन्वय बनाकर सुधारात्मक कार्यों को जल्द शुरू करने का आश्वासन दिया।

संयुक्त संचालक ने दिए शिक्षण गुणवत्ता को सुधार के टिप्स, कविता के माध्यम से किया सभी को प्रेरित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नागपुर में 17 जून को विशेष शैक्षणिक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संकुल नागपुर, नागपुर (अ), बरबसपुर एवं बरबसपुर (अ) के समस्त शिक्षक, संस्था प्रमुख, व्याख्याता एवं प्राचार्य शामिल हुए। कार्यक्रम में उपस्थित रहे माननीय संयुक्त संचालक हेमंत कुमार उपाध्याय ने शाला प्रवेश उत्सव सहित भविष्य की शैक्षणिक गतिविधियों को प्रभावी ढंग से कैसे क्रियान्वित किया जाए, इस पर विस्तारपूर्वक मार्गदर्शन दिया। उन्होंने शिक्षकों से वन-टू-वन विषय आधारित संवाद स्थापित कर न केवल उन्हें प्रेरित किया, बल्कि शिक्षण गुणवत्ता को बेहतर बनाने के ठोस सुझाव भी दिए। वहीं उपाध्याय ने हिंदी विषय के महत्व को रेखांकित करते हुए "काग के भाग्य बड़े सजनी, हरि हाथ से ले गयो माखन रोटी" जैसी कविता को लयबद्ध रूप में प्रस्तुत कर शिक्षकों को विषय को रोचक तरीके से पढ़ाने की प्रेरणा दी। साथ ही "सुखीराम-दुखीराम" शीर्षक कविता के माध्यम से शिक्षकों को प्रोत्साहित किया और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया।

इस अवसर पर एमसीबी जिला शिक्षा अधिकारी अजय कुमार मिश्रा, विकासखंड शिक्षा अधिकारी सुदर्शन पैंकरा, सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी वीरेंद्र प्रसाद पाण्डेय, खंड स्त्रोत समन्वयक सुंदरराम कैवर्त, संकुल समन्वयक दुर्गा प्रसाद जायसवाल, रूपनारायण राय, लव कुमार साहू सहित कुल 131 शिक्षक उपस्थित रहे।

प्रभारी कलेक्टर ने जनकल्याण, अधोसंरचना और प्रशासनिक सुधार के दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। प्रभारी कलेक्टर अनिल सिदार की अध्यक्षता आज जिले के कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान जिला पंचायत सीईओ श्रीमती अंकिता सोम शर्मा ने जिले के लंबित कार्यों, विकास योजनाओं की प्रगति, भूमि प्रकरण, प्रशासनिक व्यवस्था, जनकल्याण योजनाओं एवं अधोसंरचना परियोजनाओं की गहन समीक्षा की गई। इस बैठक में चिरमिरी में न्यायालय भवन और आवास भवनों के लेकर चर्चा की गई, इसके साथ ही भरतपुर में आवासीय भवन एवं मनेंद्रगढ़ में परिवार न्यायालय, एडीजे बंगला और नवीन डीपीआरसी भवन हेतु आवश्यक भूमि आवंटन के प्रस्ताव संबंधित विभाग को शीघ्र भेजने के निर्देश दिए गए। वहीं ग्राम खोखनिया में निर्माणाधीन कार्यों की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए निर्माण की गुणवत्ता बनाए रखने पर बल दिया गया। प्रभारी कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिया कि जिन विभागों में एक पद रिक्त है, वे तत्काल शासन को स्वीकृति हेतु प्रस्ताव भेजें। साथ ही स्वीप कार्यक्रम, मानदेय भुगतान, जन्म-मृत्यु प्रमाण जैसे कार्यों को समय पर पूर्ण करने को कहा गया। खड़गवां में नवीन उपपंजीयक कार्यालय खोलने की प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण करने के भी निर्देश दिए गए।

इसके साथ ही चिराग परियोजना, भूमि अधिग्रहण के रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण, सरभोका डेम की सफाई, लालपुर में बालक क्रीड़ा परिसर के लिए ट्रैक निर्माण, सिरौली में हनुमान मंदिर से संबंधित भूमि विवाद, मनेंद्रगढ़ ट्रैफिक व्यवस्था सुधार आदि विषयों पर भी चर्चा की गई और आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिए गए।

इसके साथ ही शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में डीआईईटी संस्थान, नवोदय विद्यालय की स्वीकृति, बहरासी हाई स्कूल भवन की स्थिति सुधार, खोखनिया में माध्यमिक शाला संचालन, प्रा. शा. गोवत नगर, भरतपुर में हेचरी हेतु अतिरिक्त भूमि आवंटन, खड़गवां संवर्धन केंद्र को हेचरी में रूपांतरण जैसे विषयों पर प्राथमिकता के साथ कार्य करने को कहा गया। वही भरतपुर ब्लॉक में डीसीसीबी की नई शाखा खोलने, ग्रामीण बैंक के स्थानांतरण, कृषि विभाग की योजनाओं, स्वायल हेल्थ फर्टिलिटी योजना, खेलो इंडिया लघु केंद्रों की स्थापना और कौशल विकास प्रशिक्षण के कार्यों की समीक्षा करते हुए शीघ्र प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिए गए। इसके साथ ही स्वनिधि से समृद्धि कार्यक्रम, पीएम स्वनिधि योजना, ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकृत श्रमिकों को राशन कार्ड उपलब्ध कराने की कार्यवाही एवं कौशल विकास प्राधिकरण के गठन के विषय में भी आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए। वहीं सूचना का अधिकार अधिनियम अंतर्गत जन सूचना अधिकारियों का पोर्टल में पंजीयन, ईमेल आईडी अपडेट, वोटर आईडी, आधार कार्ड, पासपोर्ट में एमसीबी जिले का नाम अपडेट करने हेतु विभागों को त्वरित कार्यवाही के निर्देश दिए गए । साथ ही मुख्यमंत्री जनदर्शन, पीएम पोर्टल एवं ई-समाधान पोर्टल में लंबित प्रकरणों के निराकरण के लिए भी अधिकारियों को निर्देशित किया गया। इस बैठक में बैठक में वन विभाग की लंबित सड़क निर्माण योजनाएं, नए आंगनबाड़ी भवनों का हैंडओवर, रामगढ़ में नया आंगनबाड़ी भवन, स्कूलों के बोरवेल मरम्मत, छात्रावासों की मरम्मत, चिमटीमार बैगापारा में घटिया निर्माण सामग्री की जांच, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को समयमान वेतनमा, ग्रेच्युटी एवं नगदकरण संबंधी प्रकरणों के साथ पुराने पेंशन प्रकरणों को प्राथमिकता से निराकरण करने हेतु निर्देश दिए गए। औद्योगिक क्षेत्र परसगढ़ी में अतिक्रमण हटाने, गोंडवाना फॉसिल्स पार्क का प्रस्ताव भारत सरकार को भेजने, नेटवर्क विहीन क्षेत्रों में बीएसएनएल व जिओ के टॉवर लगवाने, वन अधिकार पट्टा वितरण और ऑनलाइन एंट्री के कार्यों की भी समीक्षा की गई। इस बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती अंकिता सोम शर्मा, संयुकत कलेक्टर सी.एस. पैकरा, एसडीएम शशि शेखर मिश्रा, विजेंद्र सारथी, प्रितेश राजपूत सहित सभी तहसीलदार, जनपद पंचायत सीईओ, नगर पंचायतों के सीएमओ एवं समस्त विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

नेरुआ प्रा. शाला में उत्साहपूर्वक मनाया गया शाला प्रवेश उत्सव, नवप्रवेशियों का किया गया पारंपरिक स्वागत

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। विकासखंड भरतपुर के अंतर्गत संकुल कोटाडोल 'ब' की शासकीय पूर्व माध्यमिक एवं प्राथमिक शाला नेरुआ में शाला प्रवेश उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम विकासखंड शिक्षा अधिकारी भरतपुर एवं संकुल प्राचार्य कोटाडोल के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व मंडल अध्यक्ष रामसकल, जनपद पंचायत भरतपुर की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती गौरी बाई सिंह, संकुल प्राचार्य गुड्डू राम किस्पोट्टा, संकुल शैक्षिक समन्वयक सीताशरण सिंह एवं ग्राम पंचायत नेरुआ के सरपंच फूलेश्वर राम मिंज सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत नवप्रवेशी छात्र-छात्राओं के पारंपरिक स्वागत के साथ हुई, जिसमें उन्हें तिलक लगाकर एवं मुँह मीठा कराकर शाला में प्रवेश दिलाया गया। अतिथियों ने अपने प्रेरणादायक उद्बोधन में विद्यार्थियों को डॉक्टर, इंजीनियर, कलेक्टर जैसे ऊंचे पदों तक पहुंचने के लिए लगन और अनुशासन के साथ पढ़ाई करने की सीख दी। इस अवसर पर सत्र 2024-25 के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया, जिनमें कक्षा 8वीं के छात्र राजेश कुमार सिंह को सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर शिक्षकों के सहयोग से (रेंजर) सायकल प्रदान की गई। कार्यक्रम में शाला विकास समिति के सदस्य, पालकगण, जनप्रतिनिधि, समस्त शिक्षकगण एवं ग्रामवासी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। समारोह के पश्चात सभी उपस्थितों के लिए सामूहिक भोज का आयोजन किया गया, जिससे कार्यक्रम का समापन आत्मीयता और उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ।

"एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य" की थीम पर 21 जून को होगा 11 वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। भारत में "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य" की थीम पर 21 जून की प्रातःकाल में 11 वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा। प्रभारी कलेक्टर अनिल सिदार के निर्देशन में यह आयोजन मनेन्द्रगढ़ मुख्यालय के स्वामी आत्मानंद स्कूल क्रीड़ा परिसर में प्रातः 7.15 बजे से प्रारंभ किया जाएगा। योग कार्यक्रम के सुचारू संचालन हेतु अनुविभागीय अधिकारी (रा.) लिंगराज सिदार को नोडल अधिकारी एवं जिला शिक्षा अधिकारी अजय कुमार मिश्रा को सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। इस कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, स्कूली बच्चों, एनएसएस, कॉलेज विद्यार्थियों सहित युवा, बुजुर्ग, सभी इच्छुक नागरिकों एवं गणमान्य अधिकारियों-कर्मचारियों की सहभागिता रहेगी। कार्यक्रम में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संदेश का वाचन किया जाएगा।

मनोवांछित स्थान में योग करने के लिए पंजीयन प्रारंभ

भारत सरकार द्वारा भारतीय नागरिकों के लिए योग दिवस पर सहभागिता हेतु पंजीयन प्रारंभ किया गया है, जिसके अंतर्गत नागरिक अपनी इच्छा अनुसार स्थान का चयन कर पंजीयन कर सकते हैं। यह पंजीयन वेबसाइट https://yoga.ayush.gov.in/yoga-sangam के माध्यम से किया जाएगा। पंजीयन के लिए फॉर्म में संगठन संबंधित विवरण, स्थान का चयन, और मोबाइल नंबर द्वारा ओटीपी सत्यापन आवश्यक होगा। इस वर्ष के योग उत्सव में 10 प्रमुख कार्यक्रम सम्मिलित किए गए हैं, जिन्हें विभिन्न सामाजिक वर्गों की सहभागिता हेतु डिज़ाइन किया गया है। ये कार्यक्रम वास्तव में "योग सबके लिए" की भावना को प्रतिबिंबित करते हैं। इन प्रमुख कार्यक्रमों में "योग संगम" अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 के केंद्र में है। 21 जून 2025 को निर्धारित यह आयोजन एक ऐतिहासिक पहल के रूप में देशभर के 1,00,000 से अधिक स्थानों पर सामूहिक योग प्रदर्शन के रूप में आयोजित किया जाएगा। अन्य नौ प्रमुख कार्यक्रम इस योग उत्सव की तैयारी में योगदान देंगे । जिनमें योग बंधन, योग पार्क, योग समावेश, योग प्रभाव, योग कनेक्ट, हरित योग, योग अनप्लग्ड, योग महाकुंभ और संयोग शामिल हैं। भारत की भूमि सदियों से अपनी प्राचीन विविध विधाओं को धरोहर स्वरूप संजोए हुए है, जिनमें योग एक प्रमुख विधा है। वर्ष 2025 में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा, जब योग को एक वैश्विक आंदोलन के रूप में बढ़ावा मिलेगा । जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण को समर्पित है।

बाली जा रही एअर इंडिया फ्लाइट दिल्ली लौटी

नई दिल्ली। (एजेंसी)। मंगलवार को अहमदाबाद से लंदन वाली फ्लाइट से जो पैसेंजर्स यात्रा करने वाले थे, वे अहमदाबाद एयरपोर्ट पर बैठे रहे। एअर इंडिया की दिल्ली से बाली जा रही फ्लाइट ए2145 बीच रास्ते से ही दिल्ली लौट आई है। एयर इंडिया के प्रवक्ता ने बताया कि यह फैसला बाली एयरपोर्ट के पास ज्वालामुखी विस्फोट की खबरों के कारण यात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लिया गया। उन्होंने बताया कि फ्लाइट मंगलवार रात को बाली के लिए रवाना हुई थी और ज्वालामुखी विस्फोट की खबरों के बाद बीच रास्ते से लौट आई। फ्लाइट ने बुधवार तड़के दिल्ली में सुरक्षित लैंडिंग की। एयरलाइंस की ओर से उनके रुकने की व्यवस्था भी की गई है।इंडोनेशिया के माउंट लेवोटोबी लाकी-लाकी ज्वालामुखी में मंगलवार को विस्फोट हुआ। ज्वालामुखी से 11 किमी ऊंचाई तक राख उड़ी। बुधवार सुबह फिर से 1 किमी ऊंचा राख का गुबार निकला। जिससे बाली के लिए कई अंतरराष्ट्रीय उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं। इधर, हैदराबाद के बेगमपेट एयरपोर्ट को आज सुबह ईमेल में बम रखने की धमकी मिली। बेगमपेट एसीपी ने बताया कि जांच के लिए बम स्क्वॉड को बुलाया गया है और एयरपोर्ट के हर हिस्से की अच्छे से तलाशी ली जा रही है। अभी तक कोई बम नहीं मिला है। सभी लोग सुरक्षित हैं और एयरपोर्ट पर सतर्कता बढ़ा दी गई है।

छत्तीसगढ़-आंध्रप्रदेश बॉर्डर पर 3 नक्सली लीडर ढेर

जगदलपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश की सीमा पर मारेडपल्ली में हुई मुठभेड़ में ग्रेहाउंड्स फोर्स ने नक्सलियों के सेंट्रल कमेटी मेंबर गजरला रवि, अरुणा समेत 3 बड़े कैडर्स को मार गिराया है। गजरला 40 लाख का इनामी था। फिलहाल मुठभेड़ खत्म हो गई है। इलाके में सर्चिंग जारी है। मामला आंध्रप्रदेश के अल्लूरी सीताराम जिले का है। एनकाउंटर में मारी गई अरुणा स्पेशल जोनल कमेटी मेंबर स्ैंष्टरू थी और नक्सली लीडर चलपति की पत्नी है। इस पर 20 लाख का इनाम था। आंध्र के अल्लुरी सीताराम जिले के एसपी अमित बरदार ने मुठभेड़ की पुष्टि की है। 10 फरवरी 2012 को गजरला रवि ने अपने साथियों के साथ बीएसएफ की टीम पर हमला किया। कमांडेंट सहित तीन जवानों को मार दिया और उनके हथियार लूट लिए। 2014 से फरार था। छत्तीसगढ़ में एक्टिव था। बीजापुर के नेशनल पार्क एरिया में नक्सलियों के सेंट्रल कमेटी मेंबर सुधाकर उर्फ नर सिंहाचलम मारा गया था। वो तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में वांटेड था। सुधाकर पर 1 करोड़ रुपए का इनाम भी घोषित था।

इंडिगो की फ्लाइट में मची अफरा-तफरी, छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल भी थे सवार

रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट बुधवार को दोपहर अचानक हड़कंप मच गया। दिल्ली से रायपुर पहुंची इंडिगो फ्लाइट का गेट अचानक लॉक हो गया।

करीब 40 मिनट तक गेट लॉक रहा और यात्री उसमें फंसे रहे।

मुयमंत्री डॉ. यादव ने ग्रामीण रंग पर्यटन संग राज्य स्तरीय उत्सव को किया संबोधित

भोपाल(एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि ग्रामीण पर्यटन आत्मनिर्भरता और आत्म गौरव का प्रभावी माध्यम है। ग्राम स्तर पर पर्यटन गतिविधियों से जहां युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार और आर्थिक उन्नति के अवसर उपलब्ध होते हैं, वहीं पर्यटन गतिविधियां, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, तीज-त्योहार-पर्व और खानपान को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में भी सहायक होती हैं। प्रदेश में विकसित हो रहे होम-स्टे भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के अतिथि देवो भव: के भाव को चरितार्थ करने का माध्यम बन रहे हैं। होम-स्टे संचालनकर्ता और राज्य सरकार का यह प्रयास है कि प्रदेश में आने वाले सभी अतिथि प्रदेश के बारे में सकारात्मक छवि और अच्छी स्मृतियां साथ लेकर जाएं। पर्यटन के साथ पंचायत एवं ग्रामीण विकास, जनजातीय कार्य विभाग आदि समन्वित रूप से इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति में तीर्थाटन की परंपरा सदियों से रही है। दुनिया के लोग शौक और आनंद के लिए घर से निकलते हैं, वहां भारत के लोग चारधाम की मोक्ष यात्रा पर निकलते हैं, जहां वे सनातन सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात करते हुए अन्य प्रदेशों की विविध जीवनशैली और परंपराओं से परिचित होते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भारतीय मूल्यों के अनुरूप परस्पर विश्वास की भावना को बढ़ा रहे हैं। वैश्विक स्तर पर उथल-पुथल के बावजूद भी देश प्रगति पथ पर अग्रसर है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्रामीण रंग पर्यटन संग राज्य स्तरीय उत्सव को संबोधित करते हुए यह विचार व्यक्त किए। उन्होंने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्रामीण पर्यटन पर केंद्रित गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ग्रामीण रंग पर्यटन संग उत्सव के अंतर्गत विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों और संस्थाओं द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया। साथ ही चाक पर मिट्टी की कलाकृतियां भी बनाई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड के रेस्पॉन्सिबल टूरिज्म मिशन के लिए डेडिकेटेड माइक्रो वेबसाइट लॉन्च की और प्रदेश के विभिन्न गांवों में निर्मित 241 होम-स्टे का वर्चुअल लोकार्पण किया।

राजस्थान और उर प्रदेश में मानसून की एंट्री

नई दिल्ली। राजस्थान और उत्तर प्रदेश में आज मानसून की एंट्री हो गई। राजस्थान के बाड़मेर, जोधपुर, जयपुर समेत 13 जिलों में मानसून ने प्रवेश किया है। इस बार मानसून तय समय से 7 दिन पहले आया है। वहीं उत्तर प्रदेश के ललितपुर, सोनभद्र के रेणुकूट और चोपन में मानसून एक्टिव हो गया है। चार साल बाद मानसून ने अपने तय समय 18 जून को एंट्री की है। मौसम विभाग ने गुरुवार को झारखंड में भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। इसे देखते हुए वहां स्कूल बंद रहेंगे। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में केदारनाथ यात्रा मार्ग पर बुधवार सुबह तेज बारिश के चलते लैंडस्लाइड हुई।

इसमें दो लोगों की मौत हो

कांग्रेस बोली-मुनीर का ट्रंप संग लंच भारत को ट्रिपल झटका

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने बुधवार को बताया कि पीएम मोदी की अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प से फोन पर 35 मिनट बातचीत हुई। पीएम ने ट्रम्प को ऑपरेशन सिंदूर से जुड़ी जानकारी दी। मिसरी के इस बयान के बयान कांग्रेस ने कहा- पाकिस्तानी आर्मी चीफ आसिफ मुनीर आज राष्ट्रपति ट्रम्प के साथ लंच करेंगे। यह भारत की कूटनीति के तिहरा झटका है। मुनीर पाकिस्तानी सरकार के मुखिया नहीं है। उनके भड़काऊ भाषणों ने पहलगाम हमले की जमीन तैयार की थी। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा- अमेरिकी सेंट्रल कमांड के चीफ जनरल माइकल कुरिल्ला ने आतंक विरोधी अभियानों में पाकिस्तान को शानदार सहयोगी बताया। पाकिस्तान जिसने ओसामा बिन लादेन को शरण दी, वो शानदार सहयोगी कैसे बन सकता है? पाकिस्तान शानदार अपराधी है। अपराधी को सहयोगी कहना भारत के लिए झटका है। रमेश ने कहा- तीसरा झटका राष्ट्रपति ट्रम्प के ऑपरेशन सिंदूर को रोकने और भारत-पाकिस्तान के बीज सीजफायर का 14 बार श्रेय लेना है। ट्रम्प ने कहा कि उन्होंने व्यापार को साधन के तौर पर इस्तेमाल किया। पीएम मोदी ने 10 मई के बाद से कुछ नहीं कहा।

अब 15 दिन में वोटर आईडी कार्ड देगा चुनाव आयोग

नई दिल्ली (एजेंसी)। अब वोटर लिस्ट में किसी भी अपडेट के 15 दिनों के अंदर लोगों को उनके वोटर आईडी कार्ड दे दिए जाएंगे। चुनाव आयोग ने बुधवार को कहा है कि उसने वोटर आईडी कार्ड देने के लिए नई प्रक्रिया शुरू की है, जिसमें नए रजिस्ट्रेशन या मौजूदा वोटर के जानकारी में बदलाव शामिल हैं। इसके अलावा वोटर्स को स्रूस् भी मिलेंगे, जिससे उन्हें उनके कार्ड का अपडेट मिलता रहेगा। अधिकारियों ने बताया कि अभी तक मतदाताओं को मतदाता फोटो पहचान-पत्र (ईपीआईसी) वितरित करने में एक महीने से थोड़ा ज्यादा समय लगता है। नई प्रणाली इलेक्टोरल रजिस्ट्रेशन ऑफिसर के ईपीआईसी जनरेट करने से लेकर डाक के जरिए वोटर तक कार्ड देने तक हर लेवल पर ट्रैकिंग करेगी।

इसके पहले 16 जून को आयोग ने ऐलान किया है कि वह वोटिंग प्रक्रिया की निगरानी बढ़ाने के लिए सभी मतदान केंद्रों की वेबकास्टिंग करेगा। बिहार विधानसभा चुनाव से यह फैसला लागू किया जाएगा। वेबकास्टिंग डेटा आयोग के इंटरनल यूज के लिए होगा। मतलब इसे सार्वजनिक नहीं किया जाएगा। अभी तक 50 प्रतिशत पोलिंग स्टेशन की ही वेबकास्टिंग की जाती थी।

तेजस्वी यादव का तीखा हमला, कहा- लंबा-चौड़ा भाषण देकर फिर से ठगने आ रहे हैं प्रधानमंत्री

पटना (एजेंसी)। बिहार में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी सरगर्मी तेज हो गई है। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 20 जून को सिवान में एक बड़ी चुनावी रैली को संबोधित करने वाले हैं। भारतीय जनता पार्टी ने इस रैली की तैयारियां जोर-शोर से शुरू कर दी हैं और इसे चुनावी रणभेरी के तौर पर देखा जा रहा है। हालांकि, प्रधानमंत्री के दौरे से पहले ही बिहार की राजनीति में उबाल आ गया है।

राष्ट्रीय जनता दल के नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने प्रधानमंत्री मोदी पर सीधा और तीखा हमला बोला है। तेजस्वी ने कहा, प्रधानमंत्री बिहार में पलायन रोकने नहीं आ रहे, वो यहां लालू यादव और मुझे गाली देने आ रहे हैं।

तेजस्वी यादव ने प्रधानमंत्री पर निशाना साधते हुए कहा, प्रधानमंत्री बिहार को फिर ठगने आ रहे हैं। लंबा-चौड़ा भाषण देने आ रहे हैं। प्रधानमंत्री मंच पर अपने तीनों जमाइयों को माला पहनाएंगे क्या? उनका यह तंज जनता दल यूनाइटेड हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के नेताओं की ओर था, जो भाजपा के साथ गठबंधन में हैं।

राजा रघुवंशी हत्याकांड- मास्टरमाइंड राज की दादी की मौत

सोनम रघुवंशी, राज कुशवाह

फतेहपुर (एजेंसी)। यूपी के फतेहपुर में बुधवार को राजा रघुवंशी केस के मास्टरमाइंड राज कुशवाह की दादी की मौत हो गई। वह राजा रघुवंशी की पत्नी सोनम का बॉयफ्रेंड है। राज कुशवाह के घरवालों ने कहा- बेटे को फर्जी तरीके से फंसाया गया है। इसके चलते दादी परेशान थीं। सदमे में उन्हें हार्टअटैक आ गया और उनकी मौत हो गई। राज की दादी मरते दम तक यही कहती रहीं कि उनका पोता बेकसूर है। राज का घर फतेहपुर जिला मुख्यालय से 32 किलोमीटर दूर गाजीपुर थाना क्षेत्र के रामपुर गांव में है। लेकिन, वह पिछले 15 साल से इंदौर में रह रहा था। दादा ने कहा- पोते के गम में आया हार्ट अटैक दादा दरबारी सिंह ने बताया- अभी कुछ दिन पहले हमें पता चला कि मेरा पोता राज का इंदौर की लड़की सोनम रघुवंशी के साथ अफेयर चल रहा था। सोनम की शादी राजा रघुवंशी से हो गई थी।

यूपी में परिवार के 5 लोग कार में जिंदा जले

बुलंदशहर (एजेंसी)। यूपी के बुलंदशहर में सड़क हादसे में परिवार के 5 लोगों की कार में जलकर मौत हो गई। तेज रफ्तार स्विफ्ट कार पुलिया तोड़ते हुए सड़क किनारे 5 फीट नीचे गिर गई। गिरते ही कार में भीषण आग लग गई। कार में बैठे 6 में से 5 लोग जिंदा जल गए। कार सवार केवल एक महिला ही बच पाई। हादसे के बाद चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग दौड़कर मौके पर पहुंचे। उन्होंने कार का शीशा तोड़कर महिला को बाहर निकाला। तब तक आग ने विकराल रूप ले लिया था, जिससे अन्य लोगों को नहीं बचा पाए। मृतकों में पति-पत्नी और उनका बेटा शामिल हैं। साथ ही पत्नी के भाई और उसकी पत्नी की भी हादसे में मौत हो गई। हादसा बुधवार सुबह करीब साढ़े पांच बजे जहांगीराबाद थाना क्षेत्र के जानीपुर-चंदौस तिराहे के पास हुआ। परिवार बदायूं के चमनपुरा (थाना सहसवान) का रहने वाला था। सभी सुबह साढ़े तीन बजे स्विफ्ट कार से दिल्ली के लिए निकले थे। पुलिस के अनुसार, हादसे में मोमिना (24), उनके पति जुबैर (30), दो साल के बेटे जैनुल, मोमिना के भाई तनवीज (26) और उनकी पत्नी निदा (23) की मौत हो गई। मोमिना की बहन गुलनाज उर्फ भुर्री गंभीर रूप से घायल है। गुलनाज को जहांगीराबाद सीएचसी में भर्ती कराया गया है।

केदारनाथ यात्रा में दर्दनाक हादसा- खाई में गिरे यात्रियों में दो की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तराखंड के केदारनाथ यात्रा मार्ग से एक दुखद और चौंकाने वाली घटना सामने आई है। पवित्र यात्रा पर निकले श्रद्धालु उस वक्त हादसे का शिकार हो गए जब गौरीकुंड और रामबाड़ा के बीच स्थित जंगल चट्टी में अचानक संतुलन बिगड़ने से कुछ यात्री गहरी खाई में गिर गए। यह घटना बुधवार, 18 जून की सुबह करीब 12 बजे हुई, जिससे इलाके में हड़कंप मच गया। पोल नंबर 153 के पास जंगल चट्टी के इलाके में यात्रियों का एक समूह हादसे की चपेट में आ गया। जानकारी मिलते ही राहत और बचाव कार्य में जुटी ष्ठष्ठक्रस्न की टीम और पुलिस फौरन मौके पर पहुंची और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया। केदारनाथ यात्रा पर जाने के लिए हेलीकॉप्टर का किराया कितना और क्रैश होने पर क्या मिलता है मुआवजा?...

देश को मिला पहला शैलो वाटर क्राफ्ट आईएनएस अर्णाला

विशाखापट्टनम देश के पहले एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट) आईएनएस अर्णाला का बुधवार को कमीशन हुआ। इसे विशाखापट्टनम के नेवी डॉकयार्ड में कमीशन किया गया। कार्यक्रम में चीफ गेस्ट के तौर पर सीडीएस जनरल अनिल चौहान मौजूद रहे। महाराष्ट्र के वसई के ऐतिहासिक अर्णाला किले के नाम पर इसे यह नाम दिया गया है। यह जहाज हिंद महासागर में नौसेना की दमदार मौजूदगी के लिए डिजाइन किया गया है। जो उथले पानी में दुश्मन पनडुब्बियों का पता लगाने, ट्रैक और डिएक्टिवेट करेगा।

आईएनएस अर्णाला को 8 मई को भारतीय नौसेना को सौंपा गया था। आज की कमीशनिंग सेरेमनी 16 एएसडब्ल्यू-एसडब्ल्यूसी कैटेगरी के जहाजों में से पहले जहाज को भारतीय नौसेना में औपचारिक रूप से शामिल करने का प्रतीक रही। मेसर्स गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स कोलकाता और मेसर्स शिपबिल्डर्स के साथ पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत डिजाइन और बनाया गया अर्णाला डिफेंस सेक्टर में आत्मनिर्भर भारत की सफलता का प्रमाण है।

सर्जरी के लिए मुंबई जाएंगे नवीन पटनायक

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीजद अध्यक्ष नवीन पटनायक मुंबई में सर्वाइकल अर्थराइटिस की सर्जरी करवाएंगे और उनकी अनुपस्थिति में बीजू जनता दल के दैनिक कामकाज राजनीतिक मामलों की समिति संभालेगी। मुख्यालय के वरिष्ठ उपाध्यक्ष देबी प्रसाद मिश्रा पार्टी के विभिन्न विंगों के बीच गतिविधियों और कार्यक्रमों का समन्वय करेंगे। उन्हें मुंबई के प्रमुख चिकित्सा संस्थानों में से एक कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल में इलाज मिलेगा। उनका इलाज 22 जून से शुरू होगा।

महिलाओं के खिलाफ बढ़ रही हिंसा... गोपालपुर गैंग रेप पर प्रियंका गांधी ने ओडिशा सरकार को घेरा

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने बुधवार को ओडिशा में 20 वर्षीय महिला के साथ कथित सामूहिक बलात्कार के बाद ओडिशा की भाजपा सरकार की आलोचना की और दावा किया कि राज्य में महिलाओं के खिलाफ हिंसा हर गुजरते दिन के साथ बढ़ रही है। पुलिस ने बताया कि 20 वर्षीय महिला के साथ ओडिशा के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल गोपालपुर समुद्र तट पर एक सुनसान जगह पर करीब 10 लोगों ने कथित तौर पर सामूहिक बलात्कार किया। पीड़िता एक निजी कॉलेज की स्नातक छात्रा है, जिसने सोमवार को प्राथमिकी दर्ज कराई थी, जिसके बाद गोपालपुर पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया।

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने एक्स पर हिंदी में लिखे एक पोस्ट में कहा कि ओडिशा के गोपालपुर में 10 लोगों द्वारा एक छात्रा के साथ की गई क्रूरता की निंदा करने के लिए कड़े शब्द भी पर्याप्त नहीं हैं। उन्होंने कहा, ओडिशा में महिलाओं के खिलाफ हिंसा हर गुजरते दिन के साथ बढ़ रही है। जिस राज्य के मुख्यमंत्री खुद स्वीकार करते हैं कि पिछले पांच सालों में करीब 44,000 महिलाएं और बच्चे गायब हुए हैं, वहां महिलाओं की सुरक्षा को प्राथमिकता न देना अपने आप में महिलाओं के खिलाफ अत्याचार है।

घटना रविवार रात की है, जब तीन अन्य महिलाओं के साथ एक निजी मेस में रहने वाली महिला अपने सहपाठी प्रेमी के साथ राजा उत्सव के अवसर पर समुद्र तट पर गई थी। महिला ने अपनी शिकायत में कहा कि जब वे एक सुनसान जगह पर बैठे थे, तभी 10 लोगों का एक समूह उनके पास आया, उसके प्रेमी को पकड़ लिया और बारी-बारी से उसके साथ बलात्कार किया।

ऑपरेशन सिंदूर पर मोदी-ट्रम्प की फोन पर 35 मिनट बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से फोन पर बातचीत की, जो लगभग 35 मिनट तक चली। बातचीत के दौरान पीएम मोदी ने राष्ट्रपति ट्रम्प को ऑपरेशन सिंदूर के बारे में जानकारी दी। विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने इस बात की जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि बातचीत के दौरान पीएम मोदी ने स्पष्ट किया कि ऑपरेशन सिंदूर से जुड़े किसी भी विषय में व्यापार से संबंधित कोई चर्चा नहीं हुई।उन्होंने दोहराया कि पाकिस्तान के कहने पर ही भारत ने सीजफायर किया था। भारत कभी किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को स्वीकार नहीं करता और आगे भी नहीं करेगा। साथ ही, पीएम मोदी ने यह भी जोर देकर कहा कि अब भारत आतंकवाद की घटनाओं को प्रॉक्सी वॉर (परदे के पीछे की लड़ाई) नहीं, बल्कि सीधे युद्ध की कार्रवाई के रूप में देखेगा। भारत का ऑपरेशन सिंदूर अब भी जारी है। विदेश सचिव ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रम्प ने पीएम मोदी की तरफ से विस्तार में बताई गई बातों को समझा और आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई के प्रति समर्थन जताया। पीएम मोदी और राष्ट्रपति ट्रम्प की मुलाकात त्7 के इतर होनी तय थी, लेकिन ट्रम्प को 17 जून को जी 7 छोड़कर अमेरिका लौटना पड़ा। इस कारण ये मुलाकात नहीं हो सकी। इसके बाद ट्रम्प के कहने पर दोनों नेताओं की फोन पर बात हुई। बातचीत करीब 35 मिनट चली। 22 अप्रैल को पहलगाम हमले के बाद राष्ट्रपति ट्रम्प ने फोन पर पीएम मोदी से शोक संवेदना जताई थी

और आतंक के खिलाफ समर्थन जताया था। इसके बाद दोनों नेताओं 18 जून को यह पहली बातचीत थी। इसलिए पीएम मोदी ने राष्ट्रपति ट्रम्प ने ऑपरेशन सिंदूर पर विस्तार से बात की। मिसरी ने ये भी बताया कि पीएम मोदी ने ट्रम्प को यह स्पष्ट रूप से कहा कि 22 अप्रैल के बाद भारत ने आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई करने का अपना दृढ़ संकल्प पूरी दुनिया को बता दिया था। भारत ने 6-7 मई की रात को पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में सिर्फ आतंकी ठिकानों को ही निशाना बनाया था। भारत के एक्शन बहुत ही मेजर्ड (नपे-तुले), प्रिसाइज (सटीक) और नॉन-एस्केलेटरी थे। साथ ही भारत ने ये भी स्पष्ट कर दिया था कि पाकिस्तान की गोली का जवाब हम गोले से देंगे। विदेश सचिव मिसरी ने ये बताया कि 9 मई की रात को अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने पीएम मोदी को फोन किया था। वेंस ने कहा था कि पाकिस्तान, भारत पर बड़ा हमला कर सकता है। पीएम मोदी ने उन्हें साफ शब्दों में बताया था कि यदि ऐसा होता है तो भारत, पाकिस्तान को उससे भी बड़ा जवाब देगा 9-10 मई की रात को पाकिस्तान के हमले का भारत ने सशक्त जवाब दिया और पाकिस्तान को सेना को बहुत नुकसान पहुंचा। उसके मिलिट्री एयरबेस को इनऑपरेबल (फ्लाइट संचालन न होने योग्य) बना दिया। भारत के मुंहतोड़ जवाब के चलते पाकिस्तान को सैन्य कार्रवाई रोकने का आग्रह करना पड़ा। विदेश सचिव ने बताया कि पीएम मोदी ने राष्ट्रपति ट्रम्प को स्पष्ट रूप से कहा था कि इस पूरे घटनाक्रम के दौरान कभी भी किसी भी स्तर पर भारत-अमेरिका ट्रेड डील या अमेरिका की तरफ से भारत-पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता जैसे विषयों पर बात नहीं हुई थी। सैन्य कार्रवाई रोकने की बात सीधे भारत और पाकिस्तान के बीच दोनों सेनाओं के एग्जिस्टिंग चैनल्स (मौजूदा अफसरों) के माध्यम से हुई थी और पाकिस्तान के आग्रह पर ही हुई थी।

तेंदुलकर-एंडरसन ट्रॉफी के विजेता कप्तान को मिलेगा पटौदी पदक

नई दिल्ली , (एजेंसी)। भारत और इंग्लैंड के बीच 20 जून से शुरू होने वाली पांच मैचों की सीरीज के विजेता कप्तान को पटौदी पदक से सम्मानित किया जायेगा जिससे इन दोनों देशों की क्रिकेट प्रतिद्वंद्विता में इस शाही परिवार का नाम बना रहेगा। पटौदी परिवार का दोनों देशों की क्रिकेट से गहरा नाता रहा है। इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड ने इससे पहले पटौदी ट्रॉफी का नाम बदलकर तेंदुलकर-एंडरसन ट्रॉफी करने का फैसला लिया था। पिछले हफ्ते लॉर्ड्स में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के दौरान इसकी औपचारिक घोषणा होनी थी लेकिन अहमदाबाद में एयर इंडिया विमान के भीषण हादसे के मद्देनजर इसे टाल दिया गया। भारत के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर के साथ क्रिकेट जगत के कुछ अन्य लोगों ने भी इस ट्रॉफी का नाम बदलने की आलोचना की थी। पता चला है कि तेंदुलकर ने खुद ईसीबी से संपर्क किया और कहा कि पटौदी नाम भारत-इंग्लैंड क्रिकेट का हिस्सा बना रहना चाहिए। आईसीसी के चेयरमैन जय शाह की भी इसमें भूमिका रही। बीसीसीआई के एक सूत्र ने बताया, '' ईसीबी ने जब इस ट्रॉफी का नाम बदलने का फैसला किया तब तेंदुलकर ने उनसे संपर्क किया और कहा कि पटौदी नाम भारत-इंग्लैंड प्रतिद्वंद्विता का हिस्सा बना रहना चाहिए। जय शाह भी इस चर्चा में शामिल थे। ईसीबी ने अनुरोध पर सहमति जताते हुए विजेता कप्तान को पटौदी पदक देने का फैसला किया है।'' पहले से तय कार्यक्रम का आयोजन नहीं हो सका ऐसे में ट्रॉफी का नाम बदलने की औपचारिक घोषणा लीड्स में सीरीज के शुरूआती मैच से एक दिन पहले 19 जून को की जाएगी। तेंदुलकर टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं, जबकि एंडरसन टेस्ट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज है। पटौदी परिवार का भारत-इंग्लैंड क्रिकेट से गहरा नाता है। इफ्तिखार अली खान पटौदी और उनके बेटे मंसूर दोनों ने भारत की कप्तानी की और दोनों ने इंग्लैंड में लंबे समय तक काउंटी क्रिकेट खेला है।

टॉप-10 में यशस्वी-पंत शामिल, जडेजा और राहुल टॉप-40 से भी बाहर

नई दिल्ली , (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ 5 मैचों की टेस्ट सीरीज से भारतीय टीम नए वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप साइकल की शुरुआत करेगी। इस भारतीय बल्लेबाजों की रैंकिंग की बात करें तो हालत बहुत खराब हैं। टॉप-20 में केवल 2 बल्लेबाज हैं। यशस्वी जायसवाल और ऋषभ पंत टॉप-10 में हैं। इनके अलावा कोई भी भारतीय बल्लेबाज टॉप-20 में भी नहीं है। शुभमन गिल टॉप-30 में हैं। वहीं केएल राहुल और रविंद्र जडेजा टॉप-40 से भी बाहर हैं। इंग्लैंड के दिग्गज बल्लेबाज जो रूट 888 रेटिंग अंक के साथ पहले नंबर पर हैं। यशस्वी जायसवाल 847 रेटिंग अंक के साथ चौथे नंबर पर हैं। 739 रेटिंग अंक के साथ ऋषभ पंत 10वें नंबर पर हैं। उस्मान ख्वाजा के 739 रेटिंग अंक हैं। सऊद शकील के भी 739 रेटिंग अंक हैं। ख्वाजा 9वें और शकील 11वें नंबर पर हैं। वहीं भारत के नवनियुक्त कप्तान शुभमन गिल 631 रेटिंग अंक के साथ 24वें नंबर हैं। रविंद्र जडेजा 538 रेटिंग अंक के साथ 46वें नंबर पर हैं। केएल राहुल 533 रेटिंग अंक के साथ 47वें नंबर पर हैं। भारतीय टीम से बाहरचल रहे श्रेयस अय्यर 465 रेटिंग अंक के साथ 64वें और अक्षर पटेल 464 रेटिंग अंक के साथ 65वें नंबर पर हैं। नितीश कुमार रेड्डी 459 रेटिंग अंक के साथ 67वें नंबर पर हैं।

अवैध सट्टेबाजी ऐप्स प्रमोशन मामले में हरभजन, सहित इन तीन क्रिकेटरों पर ईडी ने शिकंजा कसा

नई दिल्ली , (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह , हरभजन सिंह और सुरेश रैना के लिए अवैध सट्टेबाजी ऐप्स का प्रमोशन करना महंगा पड़ सकता है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने इन अवैध ऑनलाइन सट्टेबाजी ऐप्स की जांच तेज कर दी है। एक रिपोर्ट के अनुसार इस जांच में क्रिकेटरों के अलावा अभिनेत्री उर्वशी रौतेला और अभिनेता सोनू सूद से भी पूछताछ की जा रही है। यह जांच एक प्रतिबंधित प्लेटफॉर्म के प्रचार से जुड़ी है। ईडी का मानना है कि ये प्लेटफॉर्म भ्रामक विज्ञापन और गलत तरीकों से लोगों से पैसा ऐंठ रहा है।

जांच में पता चला है कि ये प्लेटफॉर्म गलत तरीक का इस्तेमाल कर विज्ञापन करते हैं। ये वेब लिंक और क्यू आर कोड के जरिए यूजर्स को असली अवैध सट्टेबाजी साइटों पर भेजते हैं। ईडी के अनुसार, यह भारतीय कानूनों का उल्लंघन है। वहीं ये ऑनलाइन सट्टेबाजी प्लेटफॉर्म खुद को स्किल-आधारित गेम बताते हैं पर ये असल में धोखेबाजी के लिए रिग्ड एल्गोरिदम का इस्तेमाल करते हैं। इसलिए, ये जुए के दायरे में आते हैं। प्रवर्तन निदेशालय के अनुसार इस प्रकार के प्रतिबंधित प्लेटफॉर्म सेलिब्रिटीज का सहारा लेकर लोगों को गुमराह करते हैं।

शुरुआती जांच में कई कानूनों सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम धन शोधन निवारण अधिनियम के उल्लंघन की बात सामने आयी है।

आईसीसी ने छोटे देशों के लिए चार दिवसीय टेस्ट मैचों के प्रारुप को मंजूरी दी

दुबई **(एजेंसी)।** आने वाले दिनों में टेस्ट क्रिकेट बदला बदला सा नजर आयेगा। खेल के प्रति आकर्षण बनाये रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने 2027-29 के सत्र से विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) चक्र में छोटे देशों के लिए चार दिवसीय टेस्ट मैचों के प्रारुप को मंजूरी दी है। वहीं भारत , ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड पर ये नियम लागू नहीं होगा और ये पांच दिवसीय मैच खेल सकते हैं। आईसीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार मैचों की संख्या एक दिन घटाने से अहम बदलाव होगा और इससे छोटे देश अधिक टेस्ट के साथ ही लंबी अवधि की सीरीज खेल सकेंगे। इस रिपोर्ट में कहा गया है, ''पिछले सप्ताह लॉर्ड्स में डब्ल्यूटीसी फाइनल के दौरान आईसीसी अध्यक्ष जय शाह 2027-29 के डब्ल्यूटीसी चक्र के लिए चार दिवसीय टेस्ट के लिए सहमत हो गये थे।'' इसमें कहा गया है कि 'इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और भारत को एशेज, बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी और एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी के लिए पांच दिवसीय मैचों की टेस्ट सीरीज खेलने की अनुमति रहेगी। आईसीसी ने पहली बार साल 2017 में द्विपक्षीय मुकाबलों के लिए चार दिवसीय टेस्ट को मंजूरी दी थी।

रविचंद्रन अश्विन और उनकी टीम ने नहीं की बॉल टैम्परंग, टीएनसीए से मिली क्लीन चिट

नई दिल्ली , (एजेंसी)। टीम इंडिया के पूर्व ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन का नाम सोमवार को उस समय विवादों में आया जब उन पर अपने राज्य क्रिकेट संघ की लीग में विरोधी टीम ने बॉल टैम्परिंग का आरोप लगाया। अश्विन और उनकी टीम डिंडीगुल ड्रैगन्स के खिलाड़ियों पर एक मैच में बॉल को तौलिए से साप करने के दौरान उस पर केमिकल लगाने का आरोप था जिससे बॉल सूखी बनी रहे। लेकिन विरोधी टीम ये आरोप साबित नहीं कर पाई और इसके बाद अश्विन और उनकी टीम के बाकी खिलाड़ियों को क्लीन चिट मिल गई। सेइचम मदुरै पैंथर्स की टीम ने ये आरोप लगाकर सनसनी मचा दी थी। पैंथर्स ने ड्रैगन्स के खिलाफ 14 जून को खेले गए अपने मैच में ये आरोप लगाए थे। उनका कहना था कि जब मैच के दौरान गीली गेंद को तौलिए से पोंछा जा रहा था तो वे तौलिए केमिकल से उपचारित थे। हालांकि, इस मामले में तमिलनाडु क्रिकेट संघ ने कहा कि उसे उक्त मामले में कोई सबूत नहीं मिले हैं। टीएनपीएल ने इस मामले को काल्पनिक दावा और बेबुनियाद बताया।

टीएनपीएल के सीईओ प्रसन्ना कन्नन ने एक बयान में कहा है कि, जिन तौलिए को विवादित बताया जा रहा है उन्हें टीएनसीए ने ही जारी किया था और दोनों टीमों के लिए समान रूप से उपलब्ध थे। प्लेइंग कंट्रोल टीम जिसमें अंपायर और मैच रेफरी शामिल थे वे पूरे मैच के लिए दौरान गेंद पर नजर रख रहे ते। मैच के दौरान इस पर कोई चिंता नहीं जताई गई और कोई ऐसा सबूत नहीं दिया गया जिससे दावे में सच्चाई लगे। ये दावे काल्पनिक और बाद में किए गए लगते हैं।

जसप्रीत बुमराह ने टेस्ट कप्तान नहीं बनने पर तोड़ी चुप्पी

नई दिल्ली , (एजेंसी)। भारतीय तेंज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने आखिरकार भारतीय टेस्ट टीम का कप्तान नहीं बनने पर चुप्पी तोड़ी है। इस दौरान बुमराह ने कहा कि उन्होंने वर्कलोड को देखते हुए इंग्लैंड दौरे पर कमान संभालने का ऑफर ठुकरा दिया था। जिसके बाद उनके इनकार के बाद भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल को नया कप्तान नियुक्त किया। बुमराह ने 20 जून से इंग्लैंड में शुरू होने जा रही पांच मैचों की टेस्ट सीरीज से पहले कप्तानी नहीं करने के फैसले के बारे में खुलकर बात की है। 31 वर्षीय बुमराह ने स्काई स्पोर्ट्स से कहा कि, रोहित और विराट के आईपीएल के दौरान रिटायर होने से पहले मैंने बीसीसीआई से पांच टेस्ट मैचों की सीरीज में अपने वर्कलोड के बारे में बात की थी। मैंने उन लोगों से बात की, जिन्होंने मेरी पीठ का इलाज किया। मैंने सर्जन से भी बात की जिन्होंने हमेशा मुझसे कहा कि आपको कार्यभार के बारे में स्मार्ट होना चाहिए। इसलिए मैंने उनसे बात की और फिर हम इस नतीजे पर पहुंचे कि मुझे थोड़ा सतर्क होना चाहिए। इसलिए मैंने उनसे बात की और पिर हम इस नतीजे पर पहुंचे कि मुझे थोड़ा सतर्क रहना होगा। इसलिए मैंने बीसीसीआई से कहा कि मैं लीडरशिप रोल में नहीं आना चाहता क्योंकि मैं पांच टेस्ट मैचों की सीरीज में सभी मुकाबले नहीं खेल पाऊंगा। बुमराह ने आगे कहा कि, हां बीसीसीआई कप्तानी के लिए मेरी ओर देख रहा था। लेकिन फिर मुझे कहना पड़ा कि नहीं ये टीम के लिए भी उचित नहीं है। पांच टेस्ट की सीरीज में तीन मैचों में कप्तानी कोई और करे और दो मैचों में कमान कोई और संभाले, ऐसा टीम के लिए उचित नहीं है। मैं हमेशा से टीम को पहले रखता हूं बता दें कि बुमराह ऑस्ट्रेलिया दौरे पर पांचवें टेस्ट में चोटिल हो गए थे। वह पीठ की चोट के कारण आईसीसी चैंपियन ट्रॉफी में नहीं खेल सके थे।

आखिरी मैच खेल रहे एंजलो मैथ्यूज को रोहित शर्मा ने दिया स्पेशल मैसेज

नई दिल्ली , (एजेंसी)। श्रीलंका के पूर्व कप्तान और ऑलराउंडर एंजलो मैथ्यूज बांग्लादेश के खिलाफ अपना आखिरी टेस्ट मैच खेलने उतरे हैं। श्रीलंका और बांग्लादेश के बीच दो मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला मंगलवार से शुरू हुआ है। इस बीच भारतीय टीम के पूर्व टेस्ट कप्तान रोहित शर्मा ने एंजलो मैथ्यूज को शुभकामनाएं दी है। गॉल में खेला जा रहा ये मैच उनके टेस्ट करियर का 119वां और अंतिम मुकाबला है। एंजलो ने पिछले महीने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की थी। भारत के वनडे कप्तान रोहित शर्मा ने अंडर-19 के दिनों की यादें ताजा करते हुए श्रीलंका ऑलराउंडर को अपनी शुभकामनाएं भेजीं। रोहित शर्मा ने वीडियो मैसेज में कहा, हे एंजी (एंजलो मैथ्यूज) शानदार करियर के लिए बधाई। कल तुम्हारा आखिरी मैच है। मैं तुम्हें और टीम को शुभकामनाएं देना चाहता हूं। पिछले कुछ सालों में हमने अंडर-19 के दिनों से लेकर अब तक बहुत अच्छी लड़ाइयां लड़ी हैं। आप

अपने दश के लिए एक सच्चे सेवक रहे हैं, और मुझे पूरा यकीन है कि घर पर हर कोई आपके देश के लिए आपके द्वारा किए गए काम की सराहना करता है।

इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज से पहले ये दो खिलाड़ी हुए चोटिल

नई दिल्ली , (एजेंसी)। भारतीय टीम इस समय इंग्लैंड दौरे पर हैं जहां उसे इंग्लैंड के खिलाफ 5 मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। वहीं इसी दौरान भारतीय अंडर-19 टीम भी अपना दम दिखाएगी। आईपीएल में धमाकेदार खेल दिखाने वाले आयुष म्हात्रे की अगुवाई वाली भारतीय अंडर-19 टीम इंग्लैंड के खिलाफ 24 जून से 23 जुलाई के बीच एक 50 ओवर का वार्म-अप मैच, पांच यूथ वनडे और दो मल्टी-डे मैच खेलेगी। इस दौरे से पहले जूनियर क्रिकेट कमेटी ने आदित्य राणा और खिलन पटेल की जगह डी दीपेश और नमन पुष्पक को टीम में शामिल किया है। दीपेश और नमन दोनों ही इस दौरे के लिए स्टैंडबाय खिलाड़ियों की सूची में थे। बीसीसीआई ने बताया कि आदित्य को पीठ के निचले हिस्से में स्ट्रेस फ्रैक्चर हुआ है जबकि खिलन को बीसीसीआई सेंटर ऑफ

एक्लीसेंस में चल रहे हाई-परफॉर्मेंस कैंप के दौरान दाहिने पैर में स्ट्रैस रिएक्शन हुआ है। आयुष म्हात्रे को चेन्नई सुपर किंग्स के लिए आईपीएल 2025 में बेहतरीन प्रदर्शन के बाद इस सीरीज के लिए कप्तानी सौंपी गई है। मेगा ऑक्सन में अनसोल्ड रहने के बाद उन्हें घायल कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ की जगह टीम में चुना गया था। जीटी के खिलाफ एक मैच बाकी रहते हुए म्हात्रे सीएसके के तीसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। उन्होंने 6 पारियों में 34.33 की औसत से 206 रन बनाए हैं।

स्मृति मंधाना फिर वनडे में नंबर-1, 6 साल बाद किया ये कारनामा

नई दिल्ली , (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की स्टार ओपनर स्मृति मंधाना ने एक बार फिर इतिहास रच दिया। आईसीसी की ताजा वनडे रैंकिंग में मंधाना ने नंबर 1 बल्लेबाज का ताज अपने नाम कर लिया। 2019 के बाद पहली बार उन्होंने ये मुकाम हासिल किया। ये उपलब्धि उन्हें श्रीलंका और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कोलंबो में हुई ट्राई सीरीज में शानदार प्रदर्शन की बदौलत मिली।

आईसीसी की ताजा रैंकिंग अपडेट में मंधाना ने दक्षिण अफ्रीका कप्तान लॉरा वूल्वार्ट को पछाड़ छोड़ते हुए पहला स्थान हासिल किया। वूल्वार्ट हाल के मुकाबलों में वेस्टइंडीज के खिलाफ केवल 27 और 28 रन ही बना पाईं, जिससे उन्हें 19 रेटिंग अंक गंवाने पड़े। वहीं, मंधाना ने ट्राई सीरीज के फाइनल में जबरदस्त शतक जड़ा, जो उनके करियर का 11वां वनडे

सेंचुरी था। इंग्लैंड की नेट साइवर-ब्रंट और लॉरा वूल्वार्ट अब संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं। साउथ अफ्रीका की ताजमिन ब्रिट्ज पांचस्थान की छलांग लगाकर 27वें और सुने लूस सात स्थान चढ़कर 42वें पायदान पर पहुंच गई हैं। वेस्टइंडीज की शमीन कैंपबेल और किआना जोसेफ ने भी क्रमशः 62वें और 67वें स्थान पर अपनी स्थिति बेहतर की है। गेंदबाजों की रैंकिंग में वेस्टइंडीज की आफी फ्लेचर चार स्थान की छलांग के साथ 19वें स्थान पर पहुंच गई हैं। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हालिया मुकाबले में चार विकेट झटके थे। वहीं, दक्षिण अफ्रीका की नोंकुलुलेको म्लाबा और क्लो ट्रायन ने भी क्रमशः 23वें और 45वें स्थान पर अपनी पकड़ मजबूत की है। म्लाबा ने ऑलराउंडर्स की लिस्ट में भी 11 स्थान की छलांग लगाकर 35वां स्थान हासिल किया है।

कलेक्ट्रेट में कृषि उत्पादन आयुक्त ने रीवा एवं शहडोल संभाग में कृषि तथा उससे जुड़े विभागों के कार्यों की समीक्षा की

किसानों को अधिक लाभ देने वाली फसलों के लिए प्रेरित करने के साथ ही आय बढ़ाने के प्रयासों की नियमित समीक्षा के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित बैठक में कृषि उत्पादन आयुक्त अशोक वर्णवाल ने रीवा एवं शहडोल संभाग में कृषि तथा उससे जुड़े विभागों के कार्यों की समीक्षा की। बैठक में कृषि उत्पादन आयुक्त ने कहा कि किसान समृद्ध होगा तभी प्रदेश समृद्ध होगा। प्रदेश की अर्थव्यवस्था में 46 प्रतिशत योगदान कृषि और उससे जुड़े विभागों का है। खेती को लाभ का व्यवसाय बनाने के लिए लगातार प्रयास की आवश्यकता है। किसानों को परंपरागत खेती के साथ-साथ अधिक लाभ देने वाली फसलों की खेती के लिए प्रेरित करें। किसान को जिस दिन फसल से अधिक लाभ मिलेगा तो वह स्वयं नई फसल को अपना लेगा। गेंहू और धान की फसल की तुलना में दलहन और तिलहन में लाभ अधिक है। दोनों संभागों में अरहर के क्षेत्र विस्तार के लिए विशेष प्रयास करें। इसमें लागत कम और लाभ अधिक है। किसानों को तकनीकी ज्ञान के साथ अरहर की पूसा-16 किस्म की खेती के लिए प्रेरित करें। इसकी फसल 4 महीने में प्राप्त हो जाती है। किसान इसके बाद गेंहू की फसल ले सकता है।

वर्णवाल ने कहा कि हर जिले में कृषि और उद्यानिकी की विशिष्ट फसलों के लिए एक हजार हेक्टेयर का सेक्टर बनाएं। किसी फसल का जब बड़े पैमाने पर उत्पादन होगा तो उसे खरीदने और प्रोसेस करने वाले आसानी से मिल जाएंगे। फल, सब्जी, मसाला तथा फूल की खेती को इसमें प्राथमिकता दें। कई शिक्षित युवा आधुनिक तरीके से खेती कर रहे हैं। इन्हें रोल माडल बनाकर प्रमोट करें। खेती के साथ-साथ उद्यानिकी, पशुपालन, मछली पालन जैसे व्यवसाय अपनाकर ही खेती को लाभदायक बनाया जा सकता है। प्रत्येक विकासखण्ड में मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला शुरू कराएं। इनमें निर्धारित लक्ष्य के अनुसार मिट्टी के नमूने देकर उनकी जाँच कराएं तथा किसानों को मृदा हेल्थ कार्ड प्रदान करें। कृषि उत्पादन आयुक्त ने कहा कि दोनों संभागों में किसानों ने डीएपी के स्थान पर एसएसपी और एनपीके खाद को तेजी से अपनाया है। जिसके कारण डीएपी का संकट होने की आशंका नहीं है। खाद का वितरण पीओएस मशीन माध्यम से ही कराएं। इन्हें कंपनियों के सहयोग से अपडेट करा लें।

कृषि उत्पादन आयुक्त ने कहा कि सभी किसानों की फार्मर रजिस्ट्री कराएं। इसमें किसान सम्मान निधि के साथ-साथ एग्रीस्टेक में भी ई केवाईसी कराएं, जिससे किसान के साथ-साथ उसकी जमीन और फसल का डाटा अपडेट हो जाए। गिरदावरी में उद्यानिकी फसलों का भी क्षेत्र अनिवार्य रूप से दर्ज कराएं। उन्होंने संभाग के सभी जिलों में विकसित कृषि संकल्प अभियान की सफलता के लिए सभी अधिकारियों को बधाई दी। उन्होंने नरवाई जलाने की घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि संभाग के सभी जिलों में बायो एनर्जी प्लांट लगाए जा रहे हैं। इन्हें चलाने के लिए फसल अवशेषों की आवश्यकता होगी। कंपनियां किसानों से निर्धारित राशि देकर पराली तथा अन्य फसल अवशेष खरीदेंगी। बेलर मशीन, सुपर सीडर और हैप्पी सीडर के उपयोग से भी नरवाई प्रबंधन करें।

कृषि उत्पादन आयुक्त ने कहा कि जिन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर फल, सब्जी और मसालों की खेती हो रही है वहाँ खाद्य प्रसंस्करण इकाईयाँ स्थापित कराएं। मछली पालन बहुत अधिक लाभकारी है। अगले दो सालों में मछली का उत्पादन दुगना करने के लिए केज कल्चर, बायोफ्लास जैसी व्यावसायिक मछली पालन तकनीकों का उपयोग बढ़ाएं। केवल बाणसागर बांध में ही केज कल्चर के उपयोग से हजारों टन मछली का उत्पादन किया जा सकता है। पशुपालन विभाग की समीक्षा करते हुए वर्णवाल ने कहा कि जिले में गौ अभ्यारण्य और बड़ी गौशालाओं का निर्माण कराएं। जिनके संचालन से निराश्रित गौवंश को आश्रय मिलने के साथ आर्थिक लाभ भी हो। इन गौशालाओं में खाद बनाने तथा गोबर से बायोगैस प्लांट संचालित करने का प्रयास करें। सेक्स सार्टेड सीमेन का निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार उपयोग सुनिश्चित करें। इससे गर्भाधान पर गाय से केवल मादा शिशु का जन्म होता है। दुधारू पशुपालन से जुड़ी योजनाओं में निर्धारित मिल्क रूट के हितग्राहियों को प्राथमिकता दें।

बैठक में कमिश्नर रीवा बीएस जामोद ने कहा कि संभाग में खेती को तेजी से विकसित करने के लिए दिए गए निर्देशों का पूरी तरह से पालन सुनिश्चित किया जाएगा। कृषि और उससे जुड़े विभाग के मैदानी कर्मचारियों को समन्वय से कार्य करने के लिए प्रशिक्षण भी दिया गया है। कृषि क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने तथा नवाचार के लिए लगातार प्रयास करेंगे। बैठक में रीवा संभाग तथा शहडोल संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर्स ने कृषि विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। बैठक में सभी समितियों के खाते सहकारी बैंक में खोलने, बायो फोर्टिफाइड बीज के उपयोग, संरक्षित खेती, मुनगा तथा सुंदरजा आम के क्षेत्र विस्तार, स्मार्ट फिश पार्लर की स्थापना तथा अन्य विभागीय योजनाओं की समीक्षा की गई। बैठक में अपर मुख्य सचिव उद्यानिकी अनुपम राजन, प्रमुख सचिव मछलीपालन निधि निवेदिता, प्रबंध संचालक मार्फेड आलोक सिंह, आयुक्त उद्यानिकी प्रीति मैथिल, आयुक्त शहडोल संभाग सुरभि गुप्ता, आयुक्त सहकारिता मनोज पुष्प, प्रबंध संचालक मण्डीबोर्ड कुमार पुरूषोत्तम, संबंधित जिलों के कलेक्टर, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा संबंधित विभागों के संभागीय एवं जिलाधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के बाद कृषि उत्पादन आयुक्त तथा अन्य अधिकारियों ने कृषि और उद्यानिकी विभाग की प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

युवकों ने गाड़ी की बोनट पर काटा केक, बीयर-सिगरेट पीते हुए मचाया हुड़दंग

पुलिस ने कान पकड़वाकर माफी मंगवाई

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले की धार्मिक नगरी चित्रकूट में के रामघाट पर कुछ युवकों ने आस्था और मर्यादा को दरकिनार कर जमकर हुल्लड़बाजी की। इन युवकों ने गाड़ी की बोनट पर केक काटा, बीयर की बोतलें खोलीं और सिगरेट पीते हुए सार्वजनिक रूप से उत्पात मचाया।

घटना का वीडियो बुधवार को सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। इसे सुजीत पांडे नाम के युवक ने इंस्टाग्राम पर वीडियो शेयर किया था। इसके बाद स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं में गुस्सा फैल गया। रामघाट जैसे आस्था के केंद्र पर इस तरह की हरकत से धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं।

वीडियो के आधार पर चित्रकूट पुलिस ने आरोपियों की पहचान कर उन्हें देर शाम थाने बुलाया। थाना परिसर में सभी युवकों से कान पकड़कर माफी मंगवाई गई। टीआई डीआर शर्मा ने बताया कि युवकों को समझाइश देने के बाद छोड़ दिया गया है।

बिजली का झटका लगने से बुजुर्ग की मौत, तार जोड़ते समय हादसा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना सिविल लाइन थाना क्षेत्र के महदेई नकटी मोहल्ले में सोमवार दोपहर एक दर्दनाक हादसे में रामलाल विश्वकर्मा (50) की करंट लगने से मौत हो गई। रामलाल अपने घर पर टेबल फैन ठीक कर रहे थे, तभी यह घटना हो गई। जानकारी के अनुसार दोपहर करीब 12.15 बजे रामलाल अपने घर में टेबल फैन के तार को बिजली बोर्ड में जोड़ रहे थे। इसी दौरान उनका बायां हाथ बोर्ड में मौजूद एक खुली तार से छू गया और वे करंट की चपेट में आ गए। करंट लगने से वह वहीं चिपक गए और कुछ ही पलों में जमीन पर गिर पड़े।

आवाज सुनकर उनकी पत्नी संत्रा बाई विश्वकर्मा तुरंत कमरे में पहुंचीं। जैसे ही उन्होंने पति को जमीन पर बेसुध पड़ा देखा, उनके होश उड़ गए। शोर मचाने पर आसपास के लोग मौके पर इकट्ठा हो गए। रामलाल को तत्काल जिला अस्पताल सतना ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया।

सूचना मिलने पर पुलिस भी मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में हादसा बिजली का करंट लगने से होना सामने आया है। परिजन गहरे सदमे में हैं।

बिजली कटौती पर एनएसयूआई का प्रदर्शन, समाधान का आश्वासन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में शहर और ग्रामीण इलाकों में लगातार हो रही अघोषित बिजली कटौती और खराब मेंटेनेंस को लेकर बुधवार को एनएसयूआई ने हल्ला बोला। कार्यकर्ताओं ने पुराना पॉवर हाउस स्थित बिजली विभाग कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन किया। इस दौरान कार्यकर्ता परिसर में घुसने की कोशिश करने लगे, तो पुलिस से धक्का-मुक्की भी हुई।

एनएसयूआई कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ बिजली कार्यालय के बाहर नारेबाजी करने लगी। जैसे ही वे भीतर जाने लगे, मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया, जिस पर दोनों पक्षों में धक्का-मुक्की हुई। हालांकि, हालात पर जल्द काबू पा लिया गया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि सतना और आसपास के इलाकों में बिजली की हालत बदतर हो गई है। बिना किसी सूचना के घंटों बिजली काटी जाती है। मेंटेनेंस के अभाव में बार-बार फाल्ट हो रहे हैं, जिससे लोगों को गर्मी में रातें जागकर बितानी पड़ रही हैं।

प्रदर्शन की सूचना मिलते ही एसडीएम राहुल सिलाडिया मौके पर पहुंचे। उन्होंने एनएसयूआई कार्यकर्ताओं से चर्चा की और ज्ञापन प्राप्त किया। एसडीएम ने भरोसा दिलाया कि बिजली समस्या को लेकर विभागीय स्तर पर जल्द कार्रवाई की जाएगी।एनएसयूआई प्रदेश सचिव विजय यादव ने कहा कि यदि जल्द बिजली संकट का हल नहीं हुआ, तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

संभागीय सतर्कता समिति में होगी एक सदस्य की नियुक्ति

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। लोकायुक्त पुलिस विभाग में संभागीय सतर्कता समिति गठित है। समिति में शासन द्वारा निर्धारित तीन पदों में से दो पद भरे हुए हैं। समिति में रिक्त एक पद को भरे जाने की कार्यवाही की जा रही है। शासन द्वारा निर्धारित मापदण्डों के अनुसार भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय वन सेवा अथवा भारतीय पुलिस सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी इसके लिए आवेदन कर सकते हैं। इन सेवाओं के समकक्ष अन्य सेवाओं के प्रतिष्ठित क्षेत्र के भी सेवानिवृत्त व्यक्ति इसके लिए पात्र होंगे। इच्छुक सेवानिवृत्त अधिकारी अपना बायोडाटा जिला विशेष शाखा रीवा में प्रस्तुत कर सकते हैं।

रीवा में एसपी ने किया बड़ा प्रशासनिक फेरबदल, आठ थानों के बदले प्रभारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में मंगलवार देर रात पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने प्रशासनिक दृष्टि से बड़ा फेरबदल करते हुए शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के आठ थानों के प्रभारियों के स्थानांतरण आदेश जारी किए। शहरी क्षेत्र की बात करें तो, सिविल लाइन, कोतवाली और समान थाने के साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में जवा, सेमरिया, सिरमौर और गोविंदगढ़ थानों में नए प्रभारियों को नियुक्त किया है। वहीं पुलिस लाइन से टीआई पुष्पेंद्र मिश्रा को सिविल लाइन थाने का प्रभार सौंपा दिया है। इसी तरह सिविल लाइन के वर्तमान प्रभारी टीआई कमलेश साहू को तराई अंचल के जवा थाने की कमान सौंपी गई है। जबकि जवा के मौजूदा थाना प्रभारी गजेंद्र धाकड़ को पुलिस लाइन बुला लिया है। सेमरिया से टीआई श्रृंगेश राजपूत को कोतवाली थाने का नया प्रभारी बनाया गया है। जबकि कोतवाली के वर्तमान प्रभारी अरविंद सिंह राठौर को गोविंदगढ़ थाने की जिम्मेदारी दी सौंपी गई है। वहीं सिरमौर थाना प्रभारी जेपी पटेल को बैकुंठपुर का नया थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है, जबकि साइबर सेल से दीपक तिवारी को सिरमौर थाने का प्रभारी बनाया गया है। समान थाने से टीआई विकास कपीस को सेमरिया भेज दिया है। पुलिस लाइन से टीआई विजय सिंह को समान थाने का प्रभारी बनाया गया है।

रीवा में भूतपूर्व सैनिकों की रैली 22 जून को कृष्णा राजकपूर आडिटोरियम में

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।भूतपूर्व सैनिकों की रैली 22 जून को कृष्णा राजकपूर आडिटोरियम में आयोजित की जायेगी। [ड्डस्रस्र] रैली का उद्देश्य सैनिकों के योगदान का सम्मान करना और उनकी कल्याण संबंधी आवश्यकताओं को बताना है। इस संबंध में कर्नल सुरेन्द्र कुमार ने बताया है कि रैली में कल्याण सहायता पंजीकरण, सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता, पेंशन संबंधी सहायता और विशिष्ट सेवा को मान्यता देने के लिए औपचारिक कार्यक्रम जैसी गतिविधियाँ शामिल की जायेगीं। रैली में जिला सैनिक कल्याण कार्यालय और अन्य संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों के साथ साथ लगभग एक हजार भूतपूर्व सैनिकों के पूरे जिले से शामिल होने की संभावना है।

साइकिल से हज यात्रा पर निकला युवक एक हजार किमी की यात्रा कर पहुंचा रीवा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। हैदराबाद का 24 वर्षीय युवा हाकिम साइकिल से हज यात्रा पर निकला है। 1 मई से शुरू की गई इस यात्रा में वह 47 दिनों में 1000 किलोमीटर का सफर तय कर रीवा पहुंचा, जहां स्थानीय लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया। हाकिम ने बताया कि वह अमन और भाईचारे का संदेश लेकर यह यात्रा कर रहे हैं। तिरंगा लहराती साइकिल से उनकी यह अनूठी हज यात्रा भारत के बाद कजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान और दुबई होते हुए सऊदी अरब में समाप्त होगी। इस पूरी यात्रा में लगभग एक वर्ष का समय लगने की संभावना है। हाकिम प्रतिदिन 40 से 50 किलोमीटर साइकिल चलाते हैं। हाकिम ने कहा कि रास्ते में मिल रहा लोगों का प्यार और सहयोग उनकी यात्रा को आसान बना रहा है। उनका मुख्य उद्देश्य देश में अमन-चैन और भाईचारे को बढ़ावा देना है। हाकिम ने बताया कि उन्हें सभी देशों के वीजा प्राप्त हो चुके हैं।

जीएमएच में कर्मचारियों का नए सिरे से होगा पुलिस वेरिफिकेशन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के गांधी स्मृति चिकित्सालय में किशोरी के साथ ज्यादती की घटना के बाद अस्पताल प्रशासन सतर्क हो गया है। भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने कर्मचारियों का नए सिरे से पुलिस वेरिफिकेशन कराना शुरू कर दिया है।चिकित्सालय के ईएनटी वार्ड में मां का इलाज कराने आई किशोरी से वार्ड ब्वाय महेन्द्र तिवारी ने दरिंदगी की थी। घटना के बाद जमकर बवाल था और अस्पताल की किरकिरी हुई थी। इस घटना के बाद विवादों में घिरे तीन कर्मचारियों को पहले ही हटाया जा चुका है। वहीं रात में अस्पताल में गश्त भी बढ़ाई गई है। रात्रि के समय अकेले अस्पताल के बाहर निकलने वाली महिला या लड़की से सुरक्षाकर्मी पूछताछ करेंगे और बिना ठोस कारण के अकेले बाहर नहीं जाने देंगे। साथ ही रात में सीएमओ वार्ड का आकस्मिक निरीक्षण करेंगे और असमाजिक तत्वों को अस्पताल से हटाएंगे।

अर्द्धनग्न हालत में नाले में मिला महिला का शव, दुष्कर्म की आशंका

ग्रामीणों ने देखा तो पुलिस को बताया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के अतरैला थाना क्षेत्र में बुधवार को एक महिला का शव अर्द्धनग्न हालत में मिला है। शव गांव के पास झाड़ियों के किनारे बने नाले में पड़ा था।

ग्रामीणों ने शव देखकर पुलिस को सूचना दी। जानकारी के मुताबिक महिला की उम्र 40 वर्ष है, उसी गांव की ही रहने वाली है। उसकी आंख, पेट और मुंह पर चोट के निशान मिले हैं। जानकारी लगने के बाद डॉग स्क्वॉयड और एफएसएल टीम मौके पर पहुंची। टीम ने पंचनामा कार्रवाई के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए जवा के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेज दिया है।

हत्या का मामला मानकर जांच शुरू: अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक लाल ने बताया, "अतरैला थाना क्षेत्र अंतर्गत कोनी कला गांव में महिला का शव झाड़ियों के किनारे बने हुए नाले में अर्धनग्न अवस्था में पाया गया है। प्रथम दृष्टया मामला हत्या का प्रतीत हो रहा है। पुलिस हर दृष्टिकोण से मामले की पड़ताल कर रही है। घटनास्थल से फिंगरप्रिंट सहित कई साक्ष्य एकत्रित किए गए हैं। जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे, उसके अनुसार विधि अनुरूप कार्रवाई की जाएगी।"

दुष्कर्म की आशंका, पीएम रिपोर्ट से होगी पुष्टिः महिला का शव अर्धनग्न हालत में मिलने से कुछ लोग दुष्कर्म की आशंका जता रहे हैं। हालांकि पुलिस का कहना है कि पूरे मामले का खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही होगा।

मास्टर ट्रेनर के लिए प्रस्ताव 25 जून तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। वनाधिकार अधिनियम के तहत गठित जिला स्तरीय समिति, उपखण्ड स्तरीय समिति तथा ग्राम स्तरीय समिति के सदस्यों को शासन के निर्देशों के अनुसार प्रशिक्षण दिया जा रहा है। ग्राम स्तरीय समिति के सदस्यों को प्रशिक्षण देने के लिए आठ मास्टर ट्रेनर तैनात किए जाएंगे। इस संबंध में जिला संयोजक जनजातीय कार्य विभाग कमलेश्वर सिंह ने बताया कि मास्टर ट्रेनर के रूप में शासन द्वारा राजस्व विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, वन विभाग तथा अशासकीय संस्थाओं के प्रतिनिधि नामांकित करने के निर्देश दिए गए हैं। इनके लिए संबंधित अधिकारी कृपया 25 जून तक मास्टर ट्रेनर नामांकित कर दें जिससे इन्हें प्रशिक्षण के लिए संचालक क्षेत्रीय विकास योजनाएं भोपाल भेजा जा सके। प्रत्येक विकासखण्ड से दो-दो कर्मचारी नामांकित होंगे। इनके द्वारा ग्राम स्तरीय समिति के सदस्यों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

स्वागतम लक्ष्मी बालिका जन्मोत्सव कार्यक्रम का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के तहत स्वागतम लक्ष्मी बालिका जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन कुशाभाऊ ठाकरे जिला चिकित्सालय बिछिया में किया गया। कार्यक्रम में नवजात बालिकाओं एवं उनकी माताओं का सम्मान किया गया। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास नयन सिंह ने बताया कि नवजात बालिकाओं की माताओं का स्वागत हल्दी और कुमकुम लगाकर और माला पहनाकर किया गया एवं बच्चियों को उपहार का वितरण किया गया। कार्यक्रम में गर्भधारण पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (लिंग निर्धारण निषेध) की भी जानकारी दी गई। इस अवसर पर बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष मीना मिश्रा, सदस्य प्रवीण मिश्रा, विभा द्विवेदी, आरती शर्मा, बाल संरक्षण अधिकारी स्वाति वास्तव, बेनिसन हेल्पिंग सोशल वेलफेयर सोसायटी से श्लेषा शुक्ला अस्पताल की नर्सेज तथा अमर सिंह उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।